

या देवी सर्वभूतेषु, मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥



चिंतन

(सद्गुरुदेव परमहंस योगीराज श्री शक्तिपुत्र जी महाराज)

तपस्वी बनो, लेकिन तपस्वी बनने का तात्पर्य केवल माला लेकर जाप करना ही नहीं है। मंत्रजाप एक अंग है, पूजा-पाठ एक अंग है, साधना एक अंग है तथा तप का तात्पर्य है कि हर पक्ष में तपस्वी बनो। पुरुषार्थ करो, परिश्रम करो, मेहनत करो। किसान हो, तो अपने खेतों में दिन-रात एक कर दो, व्यवसायी हो, तो व्यवसाय में अपना समय लगाओ। साधना करो, पूजा-पाठ भी करो और विकारों से अपने आपको अलग रखो, अवगुणों से अपने आपको अलग रखो तथा एक संकल्प लो कि मैं एक तपस्वी हूँ, मुझे विकारात्मक जीवन नहीं जीना, मैं अपने अंदर नकारात्मक विचारों को कोई स्थान नहीं दूंगा और यदि ऐसा कोई विचार आया, तो उसको दूर हटाऊंगा। मैं सूर्योदय से पहले निश्चित जागूंगा, सूर्योदय से पहले स्नान करूंगा तथा नित्य पूजन करूंगा। एक बार निर्णय कर लो और संकल्पबद्ध जीवन जियो, आपका जीवन संवरता चला जाएगा।

सिद्धाश्रम पत्रिका

विवरणिका

वर्ष-19, अंक-02, फ़रवरी 2026

सम्पादक
पूजा शुक्ला
००००००००००
उप सम्पादक
अजय अवस्थी
००००००००००
कार्यकारी सम्पादक
आशीष शुक्ला
००००००००००
प्रबंध सम्पादक
सौरभ द्विवेदी
रजत मिश्रा
००००००००००
सहयोगी सम्पादक मण्डल
सन्तोष मिश्रा
बृजपाल सिंह चौहान
००००००००००
प्रचार-प्रसार प्रतिनिधि
प्रमोद तिवारी
००००००००००
रजि. क्रमांक
MPHIN/2008/37172
००००००००००
स्वामित्व एवं प्रकाशक
त्रिशक्ति प्रोडक्ट्स प्रा. लि.
पोस्ट- मऊ, तहसील- ब्यौहारी
जिला- शहडोल (म.प्र.) से मुद्रित

क्र.	शीर्षक	पृष्ठ क्रमांक
1-	चिंतन	1
2-	विवरणिका	2
3-	सम्पादकीय	3
4-	ऋषिवाणी: नशामुक्ति महाशंखनाद	4
5-	नववर्ष	12
6-	शक्ति चेतना जनजागरण योग साधना शिविर	14
7-	77वाँ गणतंत्र दिवस समारोह, सिद्धाश्रम	33
8-	भक्तिभाव से परिपूर्ण वातावरण में ...	37
9-	अध्यात्म गंगा/गीताज्ञान	38
10-	योग जगत्	39
11-	नशाविरोधी जनान्दोलन	41
12-	आत्मज्ञान	44
13-	आयुर्वेद	45
14-	फ़रवरी/मार्च 2026 के महत्त्वपूर्ण व्रत एवं पर्व	47
15-	श्रद्धांजलि	48

मूल्य-भारत में एक प्रति 30 रुपये एवं वार्षिक सदस्यता शुल्क 360 रुपये।

Email: subscription.sp@gmail.com



पूजा शुक्ला

संपादकीय

ऋषिवर सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज की आध्यात्मिक तपस्थली पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम के स्थापना दिवस पर्व पर 22-23 जनवरी 2026 को शक्ति चेतना जनजागरण 'योग साधना' शिविर में ऋषिवर के शिष्यों-भक्तों व सनातनधर्मावलम्बियों का सैलाब उमड़ पड़ा था। बड़ा ही युगपरिवर्तनकारी मनोरम दृश्य परिलक्षित था।

शिविर के दोनों दिवस शिविरस्थल पर लाखों की संख्या में उपस्थित सनातनप्रेमियों ने जहाँ ऋषिवर के श्रीमुख से प्रवाहित ज्ञानामृत को ग्रहण कर पवित्रता, सात्विकता व चैतन्यता से परिपूर्ण आध्यात्मिक पथ पर चलने हेतु संकल्पित हुए, वहीं दिव्य आरतियों से उत्सर्जित चेतनातरंगों से अविभूत रहे। साथ ही, शिविर के प्रथम दिवस प्रथम सत्र में योग-ध्यान-साधना के क्रम में सम्मिलित हुए।

इस शिविर ने एक बहुत बड़े महोत्सव का रूप धारण कर लिया था। भगवती मानव कल्याण संगठन के हजारों कर्मवान कार्यकर्ताओं ने व्यवस्था को सुचारुता प्रदान की, जिसकी सभी शिवरार्थियों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

श्री सद्गुरुदेव जी महाराज ने हृदयग्राह्य चिन्तन दिया कि "हमारे समाज का सतत पतन इसलिए हो रहा है, क्योंकि कर्म को, पुरुषार्थ को महत्त्व दिया ही नहीं गया। समाज को सद्कर्म की दिशा में, पुरुषार्थ की दिशा में, सत्य की दिशा में बढ़ाना पड़ेगा, अन्यथा भौतिकतावाद की विचारधारा समाज को पतन की गहरी खाई में ढकेल देगी।"

जय माता की - जय गुरुवर की

ऋषिवाणी

- परमहंस योगीराज श्री शक्तिपुत्र जी महाराज

प्रवचन शृंखला क्रमांक - 218

नशामुक्ति महाशंखनाद शिविर, रायपुर, छत्तीसगढ़, दिनांक 12 फ़रवरी 2017

नशामुक्ति महाशंखनाद

क्रमशः ...

संतोष धारण करो और देखो कि तुम्हारे जीवन में शान्ति आती है कि नहीं आती है। फिर जब 'माँ' के ध्यान में बैठोगे, तो तुम्हारा मन एकाग्र होगा। तुम जगत् जननी के भक्त हो, पूरे जगत् के साथ सम व्यवहार करना सीखो तथा जातीयता, छुआछूत, ऊंच-नीच से ऊपर उठ जाओ। आलस्य का त्याग कर दो, निराशा तुम्हें स्पर्श भी नहीं करनी चाहिए। यह पूरा जगत् केवल आशा और निराशा के भंवरजाल में डोल रहा है। जिसने आशा का दामन थाम रखा है, वह आगे बढ़ता चला जाता है और जिसने निराशा के दामन को पकड़ रखा है, वह पीछे की ओर गिरता चला

जाता है। अतः आशावादी बनो। हरपल अहसास रखो कि हम ऋषि-मुनियों की परम्परा के संवाहक हैं। हमारे अंदर एक अजर-अमर-अविनाशी आत्मतत्त्व बैठा हुआ है और हम जगत् जननी जगदम्बा के आराधक हैं। कोई भी समस्या हमारा पथ नहीं रोक सकती, कोई भी समस्या हमें घुटने टेकने के लिए बाध्य नहीं कर सकती। अपने आत्मबल को जगाओ एवं संस्कारवान बनो। उस परमसत्ता पर विश्वास रखो तथा निराशा से अपने आपको दूर रखो, क्योंकि निराशा मनुष्य की सबसे बड़ी शत्रु है।

निराशा का जीवन जीने वाले लोगों की एक ऐसी

अवस्था आती है कि वे आत्महत्या कर बैठते हैं। उनके जीवन पर धिक्कार है, जो आत्महत्या करते हैं! मैं आत्महत्या को सबसे बड़ा पाप मानता हूँ और यह किसी दूसरे की हत्या करने से भी बड़ा पाप होता है। अरे, बाहर के संसाधन, बाहर के धन-दौलत तुमसे छिन गए होंगे, जिससे ग़रीब बन गए होंगे, लेकिन आत्मा से तो ग़रीब नहीं बने। आत्मा का तार तो परमसत्ता से जुड़ा हुआ है और आत्मिक धन के सामर्थ्य की तुलना किसी अन्य धन से नहीं की जा सकती। इतनी अलौकिक शक्ति-सामर्थ्य आपके शरीर के अंदर विद्यमान है, फिर क्यों नहीं यह निर्णय कर पाते कि जब अपने जीवन को नष्ट करने जा रहा हूँ, तो मैं अपना जीवन जगत् जननी को समर्पित कर दूँ? अब से मैं अपना पूरा जीवन 'माँ' की भक्ति में लगा दूंगा, पूरा जीवन परोपकार में लगा दूंगा। मेरा मानना है कि ऐसा ठानने वाला व्यक्ति कभी भूखों नहीं मर सकता। परमसत्ता यदि किसी को जन्म देती है, तो उसके आहार की व्यवस्था पहले कर देती है। एक बच्चा जब माँ के गर्भ में आता है, तो माँ के स्तन पर दूध आ जाता है। वह दूध कौन भेजता है? जो अच्छाईयाँ बचपन से हमारे साथ आती हैं, उन्हीं अच्छाईयों को लेकर आप सतत आगे बढ़ते रहो। आप समस्त समस्याओं से पार जा सकते हो, मगर हरपल अपने आत्मबल को जगा करके रखो। ये जो सहज क्रम हैं, उनका पालन करो।

कभी भी यदि निराशा से घिर गए हो, कोई मार्ग दिखाई न दे रहा हो, तो कभी भूल करके आपराधिक पथ पर मत जाना, आत्महत्या के पथ पर मत जाना, बल्कि एक बार मेरे पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम में आ जाना, तुम्हें चेतना की प्राप्ति होगी, तुम्हें संस्कारों की प्राप्ति होगी, तुम आत्महत्या जैसा पथ भूल जाओगे। इतना ही नहीं, तुम्हारे अंदर इतनी शक्ति-सामर्थ्य आ जायेगी कि तुम औरों का भी कल्याण करने लग जाओगे। आज अनेक ऐसे कार्यकर्ता यहाँ बैठे हुए हैं, जो जीवन के अंतिम क्षणों पर मेरे उस आश्रम में

पहुँच गए थे, जिनमें से कोई आत्महत्या करने के बारे में सोचता था, तो कोई आपराधिक मार्ग पर जाने के बारे में सोचता था, मैंने उन्हें ऐसी चेतना दी है कि वे स्वयं सम्मान का जीवन जीते हैं और दूसरों को भी सम्मान का जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं।

पारस पत्थर में केवल एक गुण होता है कि जो लोहा उसके सम्पर्क में आता है, वह उस लोहे को सोना बना सकता है। मैंने तो तुम्हें अपना चेतनाअंश बनाया है, मैंने तुम्हें वे संस्कार दिए हैं कि जो तुम्हारे सान्निध्य में आयेगा, वह तुम्हारे समान बन जायेगा। शराबी दूसरों को शराबी बना देता है, अपराधी दूसरे को अपराधी बना देता है। मैंने भी जब परमसत्ता के चरणों पर बैठकर समाजकल्याण का बीड़ा ठाना कि समाज को कैसे सही दिशा दी जाए, तो मैंने उसी लक्ष्य को देखा कि जब एक अपराधी के सम्पर्क में आने वाला दूसरा अपराधी बन जाता है, तो अच्छे संस्कारवान पुरुष के सम्पर्क में आने वाला दूसरा संस्कारवान क्यों नहीं बनेगा? इसलिए मैंने निर्णय लिया कि मैं अपनी एकांत साधना को और गति दूंगा तथा अपनी चेतनातरंगों के माध्यम से अपने शिष्यों को चेतनावान् बनाऊंगा। उनके अंदर पात्रता हो या न हो, यदि वे मेरे सम्मुख आ गए हैं और मेरे विचारों के अनुरूप वे अपना थोड़ा भी जीवन जीने का प्रयास करते हैं, तो मैं स्वयं साधना, तपस्या कर-करके उन्हें उस साधना-तपस्या का अंश बाटूंगा कि जिससे वे संस्कारवान बन सकें, चेतनावान् बन सकें और मानवता की सेवा में अपने जीवन को समर्पित कर सकें।

दुर्गासप्तशती में आप लोग पढ़ते हो कि एक रक्तबीज था, जिसके रक्त की एक बूंद ज़मीन पर गिरती थी और ज़मीन का स्पर्श पाते ही दूसरा रक्तबीज बन जाता था। जब एक राक्षस यह कर सकता था, तो मैंने विचार किया कि मैं वह कार्य क्यों नहीं कर सकता? मैं भी अपनी चेतना

के माध्यम से चेतनावान् शिष्यों का निर्माण करूंगा और एक नहीं, लाखों-लाख ऐसे शिष्य तैयार कर दूंगा, जो इस तड़पती-कराहती मानवता के सहायक बनेंगे, उन्हें सहारा देंगे। इसीलिए मैंने अग्नि के पथ का चयन किया, साधनापथ का चयन किया। मैं भी चाहता, तो मुझे हर ज़िले में लोग बुलाना चाहते थे, हर ज़िले में क्या, हर घर में मुझे बुलाना चाहते हैं, मगर फिर भी मैं वर्ष में केवल दो बार ही समाज के बीच समय देता हूँ। एक बार उस पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम में शिविर का समय देता हूँ और यदि बहुत आवश्यकता हुई, तो साल में एक या दो बार आश्रम के निर्माण से सम्बन्धित कार्यों के लिए आश्रम से बाहर जाता हूँ। मैंने एकांत साधना के पथ का चयन किया कि जिस तरह मैंने स्वयं के लिए बचपन से साधना की, उससे ज़्यादा



**चिंतन प्रदान करते हुए परम पूज्य सद्गुरुदेव
परमहंस योगीराज श्री शक्तिपुत्र जी महाराज**

तीव्र गति से मानवता के कल्याण के लिए साधना करूंगा और अपनी नित्य की साधना समाजकल्याण के लिए समर्पित करूंगा। मैं देखता हूँ कि समाज में कैसे परिवर्तन नहीं आयेगा और वह परिवर्तन आया।

मैंने प्रकृति से हर गुण को सीखा। आप भी प्रकृति के बनो, प्रकृति से कुछ सीखो। एक कोई भी पुष्प, यदि वह खिल जाए, सुगन्धित होजाए, तो उसके पास से निकलने वाला व्यक्ति उसकी सुगन्ध से नहीं बच सकेगा। जो उस फूल का अनादर भी करता होगा, वह भी उस सुगन्ध को प्राप्त अवश्य करेगा। इसीलिए आपको चेतनावान् बनाया जा रहा है कि आप समाज के लिए उदाहरण बनो। कौन

कहता है कि कलिकाल है? मैंने कहा है कि इस कलिकाल में आप सबकुछ कर सकते हो। यह कर्म करने का युग है तथा पुनः एक बार नीव डालने की आवश्यकता है कि हाँ, हम पुनः समाज में वह नीव डाल सकें। पुनः समाज के बीच साधक और साधिकाएं पैदा हो सकें तथा उनके घरों में चेतनावान् पुत्र-पुत्रियों का जन्म हो सके। एक बार संस्कारों की दिशाधारा क्यों नहीं बढ़ा सकते? बस उसके लिए आवश्यकता है त्यागपूर्ण जीवन की, परोपकार की भावना की, निश्छल भाव से मानवता की सेवा करने की। एक बार ठान करके देखो, तुम्हें शान्ति मिलेगी, तुम्हें सुख मिलेगा, तुम्हारी समृद्धि बढ़ेगी।

आत्मावान बनकर देखो। आत्मचेतना की प्राप्ति के लिए मैंने कई सरल से सरल मार्ग बताए हैं। वेद-पुराण, शास्त्रों को पढ़ते रहोगे, रटते रहोगे, मार्ग ढूँढ़ना कठिन हो जायेगा। आज देश में अनेक लोग हैं, जो गीता, रामायण, वेद, पुराणों को कंठस्थ किए होंगे, मगर उनके जीवन को देखोगे, तो कोई खास परिवर्तन नहीं होगा और तुम थोड़ी सी साधना करते हो, तो तुम्हारे जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन आ जाता है, तुम्हारे अंदर साधक प्रवृत्ति आ जाती है और तुम अवगुणों का त्याग कर देते हो। आज गीता, रामायण, वेद, पुराणों को तो एक शराबी भी रट सकता है, चरित्रहीन भी रट सकता है, मांसाहारी भी रट सकता है, लेकिन उनको रट लेने से कल्याण नहीं होगा, अपितु वे धर्मग्रंथ हमें किस दिशा में बढ़ाना चाहते हैं, उस पर जब हम स्वयं बढ़ेंगे, तब हमारा कल्याण होगा। अतः उस दिशा में बढ़ना सीखो। आपकी आत्मचेतना को प्रभावक करने के लिए मैंने 'ॐ' और 'माँ' बीजमंत्र दिए हैं कि ये ऐसे बीजमंत्र हैं कि जब नित्य आप इनका उच्चारण करोगे, तो आपकी सुषुम्ना नाड़ी में मंथन होगा, चेतनाशक्ति प्रभावक होगी। मेरुदण्ड को सीधा करके बैठ जाओ और यदि नित्य पाँच मिनट उच्चारण करोगे, तो आप स्वयं महसूस करोगे कि जब आप मन को एकाग्र करके उनका उच्चारण करते हो, तो आपका पूरा शरीर संतुलित होजाता है।

आज्ञाचक्र, जिसे मैंने राजाचक्र बताया है, उसमें ध्यान लगाओ। नित्यप्रति कम-से-कम पाँच मिनट समय देना तो शुरू करो। नित्यप्रति प्राणायाम करो तथा शेष जो समय मिलता है, आप पूजा-पाठ, मंत्रजाप, दुर्गाचालीसा पाठ करते हो, तो उनको भी करते रहो। मगर कम-से-कम तीन चीजों को कभी मत भूलिए। प्राणायाम, 'ॐ' और 'माँ' का क्रमिक उच्चारण तथा आज्ञाचक्र पर ध्यान लगाना। प्राणायाम में सहज प्राणायाम से प्रारम्भ करो। सहज प्राणायाम से ही प्राणशक्ति का लाभ सहज ही आपको

प्राप्त हो जायेगा। धीरे-धीरे करके पूरी श्वास को भरिए, जितना अच्छा लगे, उतनी देर रोकिए और फिर धीरे-धीरे करके श्वास को बाहर कर दीजिए। थोड़ी देर बैठकर आप अभ्यास करेंगे, तो आपकी सुषुम्ना नाड़ी स्वतः ही आगे बढ़ने लगेगी, खिचने लगेगी।

'ॐ' और 'माँ' का उच्चारण सामूहिक हो, तो सामूहिक कर सकते हो और यदि अपने घर पर कर रहे हो, तो जितना आपको अच्छा लगे, उस स्वर में उच्चारण करो। प्राणायाम जितना अच्छा लगे, उतनी देर करो और फिर थोड़ी देर आज्ञाचक्र पर ध्यान लगाओ, मनमस्तिष्क को शून्यवत करने का प्रयास करो। तीनों क्रमों के लिए कम-से-कम पाँच-पाँच मिनट का समय अवश्य दो। अपने जीवन को संवारने के लिए कुल पन्द्रह मिनट समय तो दे ही सकते हो। इन क्रमों को करके देखो, मन एकाग्र होगा और सबकुछ हमारे मन की एकाग्रता पर आधारित है। गुरुवार के सहज सरल व्रत का आपको एक मार्ग दिया गया है और गुरुवार का व्रत केवल गुरु के लिए ही नहीं होता या ब्रह्मस्पति के लिए नहीं होता, अपितु गुरुवार ज्ञान का दिन कहलाता है। एक मूल विचारधारा को लेकर चलो कि गुरुवार के दिन का व्रत हम उस माता आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा के लिए रह रहे हैं, उस ज्ञान की देवी की आराधना के लिए हम व्रत रह रहे हैं।

विज्ञान भी कहता है कि सप्ताह में यदि एक दिन व्रत रहते हो, तो आपके शरीर में एक अलग ही संतुलन आता है। इस शरीर की नाड़ियों को थोड़ा तो विश्राम दो। सुबह से शाम तक बस खाते रहोगे, तो असंतुलन पैदा होता है ! इसलिए आप ज़्यादा कुछ नहीं कर सकते हो, तो सप्ताह में गुरुवार का व्रत रहना सीखो और व्रत भी बहुत सहज सरल क्रम से रहना है। गुरुवार का व्रत ऐसा नहीं है कि आप पीला भोजन करें, पीले कपड़े पहनें, केले के पत्ते का पूजन करें। गुरुवार को आप दिनभर सुबह से शाम तक व्रत रहें, दिन



परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के चिंतन श्रवण करते हुए भक्तगण

में थोड़ा-बहुत फलाहार करना हो, तो कर सकते हो और सायंकाल सूर्यास्त के बाद 'माँ' की आराधना, पूजन करके घर में बने शुद्ध सात्विक दाल, चावल, नमक, रोटी, जो भी हो, उस भोजन को आप करिए, केवल असात्विक भोजन मत करिए। यदि कहीं यात्रा में हो और आरती, पूजन नहीं कर सकते हो, तो 'माँ' का स्मरण करके रास्ते में जो भी शुद्ध सात्विक भोजन मिल जाए, उसे आप ले लो। यदि कभी गुरुवार का व्रत आपसे छूट जाये, तो जब अगला गुरुवार आए, तो आप अगले गुरुवार के व्रत को रह सकते हो।

वैसे तो सभी दिन 'माँ' के हैं, प्रतिदिन आराधना, पूजन करना चाहिए, लेकिन कृष्णपक्ष की अष्टमी, नवमी और चतुर्दशी अतिमहत्त्वपूर्ण हैं, इसलिए मैं स्वयं अष्टमी के दिन विशेष रूप से 'माँ' के अनुष्ठान, यज्ञ का अतिमहत्त्वपूर्ण क्रम करता हूँ, मैं उस दिन व्रत रहता हूँ। वैसे देखा जाए, तो मेरा प्रत्येक दिन व्रत के ही समान होता है, स्वल्पाहार ही लेता हूँ। हो सके तो आप भी कृष्णपक्ष की अष्टमी को व्रत रह लिया करें। उसमें भी आपको उसी तरह छूट है कि

दिनभर आपको व्रत रहना है और सायंकाल सूर्यास्त के बाद आप सात्विक भोजन ले सकते हो। किसी कारणवश अशुद्धता या बाहर रहने से या भूलवश कृष्णपक्ष की अष्टमी छूट जाए, तो दूसरे दिन की नवमी तिथि को व्रत रख लो और यदि नवमी भी छूट जाए, तो चतुर्दशी को व्रत रह लो। अष्टमी, नवमी एवं चतुर्दशी व्रतों का एकसमान फल होता है।

श्री दुर्गाचालीसा पाठ करने का सहज क्रम आपको दिया गया है। दुर्गाचालीसा के अखण्ड पाठ का अनुष्ठान उस दिव्य आश्रम पर चल रहा है और यदि आपको उससे जुड़ना है, तो कम-से-कम प्रतिदिन एक दुर्गाचालीसा का पाठ अवश्य कर लिया करें। अपने घरों पर 'माँ' का ध्वज लगाएं। आज तो अधिकांश घरों में नानाप्रकार के तंत्र की वस्तुएं टंगी रहती हैं, काली खोपड़ी टंगा दो, घड़े को काला करके उस पर चित्र बनाकर टांग दो, नहीं तो नज़र लग जायेगी, यह दोष हो जायेगा! अरे, ऊटपटांग के टोने-टोटके छोड़कर उस जगत् जननी के मार्ग को क्यों नहीं अपनाते?

अपने घर पर 'माँ' का ध्वजा लगा दो, फिर देखो कि आपको सभी ग्रह-दोषों से मुक्ति मिल जायेगी। कोई नज़र या टोने-टोटके का आप पर ग़लत प्रभाव नहीं पड़ेगा।

'माँ' का ध्वज यदि आपके घर की छत पर लगा है, तो जो लोग वास्तु और दिशा के नानाप्रकार के दोष बताते हैं, तो किसी भी दोष का ग़लत प्रभाव नहीं पड़ेगा। उस ध्वज से दूसरा लाभ भी ले सकते हो। जब आप घर से बाहर निकलो, तो एक बार ध्वज को नमन करके जाओ, फिर देखोगे कि आपकी यात्रा फलीभूत होगी। जब बाहर से घर पर आओ, तो उस ध्वज को नमन करते हुए घर पर प्रवेश करो, घर में सुख-शांति और समृद्धि आयेगी। सरल क्रमों को अपनाकर तो देखो, बहुत सहज और सरल क्रम आपको दिए गए हैं। घर के वातावरण को शुद्ध सात्विक और मंदिर के समान रखो। केवल मंदिर में जाकर माथा टेक लेने से कल्याण नहीं हो जायेगा। अधिकांश समय तो घर में ही रहते हो, मंदिर तो थोड़ी देर के लिए जाते हो। अर्थात् सात्विक वातावरण तो आपको थोड़ी देर के लिए ही मिला और घर में जाकर नानाप्रकार की निरर्थक बातों, चर्चाओं में लगे रहते हो, घर की दीवारों पर अश्लील चित्रों को लगाकर रखते हो, नानाप्रकार के ऊटपटांग के गीत-संगीत में लगे रहते हो!

घर पर सात्विकता के गीत-संगीत बजाओ, इससे बच्चे संस्कारवान बनेंगे। आपके घरों पर जो चित्र लगे हों, भारत के वीर सपूतों के लगे हुए हों, ऋषि-मुनियों के लगे हुए हों, देवी-देवताओं के लगे हुए हों, तो आपके घर का वातावरण ही अलग होगा। तरंगों का प्रभाव पड़ता है। अपने घर के वातावरण में सात्विकतरंगों को प्रवेश करने का अवसर तो दें, फिर देखें कि हमारे जीवन में किस प्रकार से परिवर्तन आता है। उन परिवर्तनों की दिशा में कार्य करो। एक-एक चीज़ को संवारो। अपने आज्ञाचक्र को कभी खाली नहीं रखना चाहिए। मैंने लाल कुंकुम का तिलक बताया है कि आज्ञाचक्र पर लाल कुंकुम का तिलक लगाकर रखो और यदि लाल

कुंकुम सूट नहीं करता है, तो आप चंदन लगा सकते हो, केसर लगा सकते हो, हल्दी का तिलक लगा सकते हो या जिसका लगाना चाहो, लेकिन प्रयास करो कि आज्ञाचक्र पर छोटा सा ही तिलक अवश्य लगाकर रखो। इससे आपका आज्ञाचक्र सदा सात्विकतरंगों से प्रभावक रहेगा तथा शान्ति, संतुलन, तेज और आपका ओज बढ़ेगा।

आज्ञाचक्र को आच्छादित रखना चाहिए। इससे किसी नज़र या जादू-टोने का कभी प्रभाव नहीं पड़ेगा, जिनके लिए आप तंत्र-मंत्र करवाने जाते हो। गले पर रक्षाकवच धारण करो, जो संगठन के कार्यकर्ताओं को दिया गया है। शिष्याओं के लिए रक्षारुमाल दी गई है, उसे अपने पास रखो। आपको हरपल अहसास बना रहेगा कि मैं माता आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा का भक्त हूँ, आपके अंदर एक अलग भाव हरपल बने रहेंगे, सात्विकता और पवित्रता बनी रहेगी। आपको ये जो छोटे-छोटे क्रम दिए गए हैं, उनको बनाकर रखो और सबसे महत्त्वपूर्ण आपको शक्तिजल प्रदान किया जाता है, जिसमें मैंने समाजकल्याण के लिए विशिष्ट ऊर्जा समाहित की है। आज समाज को तंत्र-मंत्र-यंत्र में ही तो लूटा और ठगा जाता है! मैंने शक्तिजल तैयार किया है जिसमें नशामुक्ति, स्वास्थ्य लाभ, समाजकल्याण के लिए, ग्रहों की अनुकूलता के लिए सभी प्रयोग सम्पन्न किए गए हैं और वह शक्तिजल समाज को निःशुल्क बँटवाता हूँ। बड़े-बड़े रत्न व अंगूठियाँ धारण करके देख लीजिए और नित्य शक्तिजल की दो-चार बूंद पीकर देख लीजिए, उन रत्न अंगूठियों की अपेक्षा आपको ज़्यादा लाभ प्राप्त होगा।

विषम-से-विषम परिस्थितियों में शक्तिजल की एक बूंद आपके लिए कई गुना ज़्यादा फलीभूत होगी। उसे केवल 'माँ' के उन महाशक्तियज्ञों में ही पूर्ण किया जाता है, जिनके बारे में मैंने कहा था कि मैंने समाज के बीच आठ यज्ञ प्रमाणस्वरूप समाज को अहसास कराने के लिए किए थे। शेष 100 यज्ञ पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम में सम्पन्न



परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के चिंतन श्रवण करते हुए भक्तगण

होंगे। शक्तिजल में गंगाजल या नर्मदाजल मिलाकर चाहे जितना बढ़ाकर रख लीजिए। ये जो क्रम हैं, इनका पालन कीजिए। नित्य अपने घरों में दुर्गाचालीसा का पाठ कीजिए तथा आपके जिलों व तहसीलों में जो महाआरती के क्रम होते हैं, उन क्रमों में अवश्य सम्मिलित हुआ करें। दो घण्टे का कार्यक्रम होता है और महीने में एक बार महाआरती होती है, इसलिए समय मिले तो उसमें अवश्य सम्मिलित होजाओ। पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम में हर वर्ष शारदीय नवरात्र पर अष्टमी, नवमी और विजयादशमी को तीन दिन का शिविर रहता है, समय निकालकर उस शिविर में भी सम्मिलित होइए। यदि संगठन के कार्यकर्ता इन क्रमों का पालन करेंगे, तो वे स्वयं देखेंगे कि उनका जीवन संवरता चला जाएगा।

अवगुणों से दूर रहो, अपने अंदर की चेतनाशक्ति को बढ़ाओ, निर्भीक रहो तथा भय का त्याग कर दो। किससे भयग्रस्त रहते हो? आजकल हर मनुष्य किसी-न-किसी

रूप से भयग्रस्त है। कोई शत्रुओं से प्रताड़ित है, कोई रोगों से भयग्रस्त है, कोई घर से निकल रहा है, तो भयग्रस्त है कि अपराधी न मुझसे टकरा जाएं, छोट-छोटे बच्चे-बच्चियाँ बाहर जाने पर भयग्रस्त हैं, लोफड़ों, लुच्चे-लफंगे लोगों से लड़कियाँ भयग्रस्त हैं। हर व्यक्ति को लगता है कि मैं घर से बाहर जा रहा हूँ, तो कहीं मेरा एक्सीडेंट न होजाए, कोई मोटरसाइकिल चला रहा है, तो सोचता है कि कहीं एक्सीडेंट न होजाए! एक भय का वातावरण पूरी तरह से व्याप्त हो चुका है। निर्भीकता का जीवन जियोगे, तो तुम्हारे साथ कुछ नहीं होगा और तुम्हारे कार्य करने की क्षमता बढ़ेगी। भय से हमारी कोशिकाओं में संकुचन आ जाता है, अतः निर्भीकता का जीवन जियो। माता भगवती आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा पर भरोसा रखो, उनकी इच्छा के विरुद्ध एक रोयां भी इधर से उधर नहीं हिल सकता और जब जो होना है, उससे ज़्यादा कभी कुछ होगा भी नहीं। अरे, जीवन का अंत

तो केवल एक बार होना है, फिर क्यों भयग्रस्त हो? क्या भय कर लेने से तुम्हारी मृत्यु टल जायेगी? एक-न-एक दिन सभी को मृत्यु का वरण करना पड़ेगा।

सच्चा शक्तिसाधक वह है, जो मृत्यु का हरपल आवाहन करता है कि तुझे जब आना हो, मैं तेरा स्वागत करने के लिए तत्पर हूँ। चूंकि मैंने जीवन के एक-एक पल को जिया है तथा मैं जैसा था और जब से इस जीवन में आया, मैंने अपनी ऊर्जाशक्ति को बढ़ाया है। मृत्यु मेरा क्या बिगाड़ लेगी? मैं इस शरीर का त्याग करूंगा और इससे भी अधिक चेतनावान् बनकर मुझे नवीन जीवन प्राप्त होगा। यह तन अपनी उम्र को प्राप्त कर चुका है और मैं तो चाहता हूँ कि मुझे नवीन जीवन, नई चेतना प्राप्त हो। क्यों मौत से भयग्रस्त हो? सत्तर-सत्तर, अस्सी-अस्सी साल के वृद्धों को भी देखता हूँ कि यदि कोई बड़ी बीमारी आ गई है, तो भयग्रस्त हो जायेंगे। अरे बीमारी आ गई, तो इलाज कराइये, ठीक होते हो, तो अच्छी बात है, नहीं ठीक होते हो, तो मृत्यु ही तो आयेगी। सभी को एक दिन मरना है, मगर कंगाल कर जाते हैं अपने घर को! निश्चित है कि घर के लोगों की ज़िम्मेदारी है कि उनकी सेवा करें, उनका इलाज कराएं, मगर कई बार देखा जाता है कि घर की ज़मीन-जायदाद को बेच करके पूरा लगा देते हैं। इलाज उतना कराओ, जितना आप करा सकते हो, जितनी आपकी सामर्थ्य है।

सरकारें तो कान में तेल डालकर बैठी रहती हैं। आज़ादी के बाद से लेकर आज तक लोगों को उत्तम स्वास्थ्य व शिक्षा तक नहीं मिल पाई, सारी व्यवस्थाएं छिन्नभिन्न पड़ी हुई हैं, मगर कम-से-कम अपने आत्मबल का तो जीवन जियो, संस्कारों का तो जीवन जियो कि हम निर्भीकता

का जीवन जियेंगे। आपका गुरु भी वैसा जीवन जीता है। एक क्षण भी जीवन में ऐसा स्पर्श नहीं कर जाता, बल्कि आवाहन करता हूँ कि मैं मृत्यु का स्वागत हरपल करता हूँ कि जब उसे आना हो, आए। क्योंकि मैं जानता हूँ कि जब तक माता आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा नहीं चाहेंगी, मृत्यु मेरे शरीर का स्पर्श भी नहीं कर सकती। चेतना की उस अवस्था को प्राप्त कर लो, तो परमसत्ता तो तुम्हें इतना अधिकार दे देती है कि तुम अपने जीवन को जब जहाँ जैसा चाहो, वैसे अपने शरीर का त्याग कर सकते हो। साधना से वह सामर्थ्य भी आ जाती है, अतः उस पथ पर बढ़ना सीखो। चेतनावान् बनो, निर्भीक बनो तथा आत्मकल्याण के लिए हरपल सजग रहो।

आत्मकल्याण की साधना निष्काम साधना कहलाती है और आत्मकल्याण के साथ-साथ जनकल्याण की कामना हरपल आपके साथ जुड़ी रहे। सच्चा शक्तिसाधक वही है, सच्चा इंसान वही है, जो अपना कल्याण करने के साथ-साथ जनकल्याण करने के कार्य में भी रत रहता है। उस दिशा में अपनी सामर्थ्य को लगाते चले जाओ, फिर देखो कि तुम्हें जीवन में कभी किसी चीज की कमी नहीं पड़ेगी, जन्म-दर-जन्म आपका स्तर ऊपर उठता चला जायेगा। जो इस जीवन में है, इस जीवन का भी सुख उपभोग मिलेगा और नवीन जीवन में सबकुछ प्राप्त होगा। इस भावना को लेकर 'माँ' की भक्ति करो, फिर देखो कि आपको कितना आनन्द मिलेगा और कितनी तृप्ति मिलेगी। कर्म पर सजग रहो और यह नहीं कि हमने दो घण्टे पूजा-पाठ कर लिया, 'माँ' की छवि के सामने बैठ गए, तो हम बहुत बड़े भक्त बन गए, बल्कि चौबीस घण्टे एक जैसा आपका जीवन हो।

क्रमशः ...

संकलन- बहन पूजा शुक्ला

विशेष

परम पूज्य सद्गुरुदेव योगीराज श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के विशिष्ट चेतनात्मक चिन्तन का प्रसारण संतवाणी टीवी चैनल पर प्रतिदिन प्रातः 08:00 से 08:30 बजे तक किया जाता है।

1 जनवरी 2026

पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम पर साधना-सेवा और समर्पण दिवस के रूप में मनाया गया नववर्ष



अन्तर्राष्ट्रीय नववर्ष, दिनांक 01 जनवरी 2026 की प्रातःकालीन बेला। प्रातःकालीन आरतीक्रम, प्रणामक्रम एवं समस्याओं से ग्रसित व नशामुक्ति का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम पहुंचे नए भक्तों से मिलने के उपरान्त परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज 08:45 बजे स्वामी श्री रामप्रसाद आश्रम जी महाराज की समाधिस्थल पर पहुंचे और नमन व परिक्रमा के पश्चात् त्रिशक्ति गोशाला पहुंचकर गायों को अपने करकमलों से रोटियाँ खिलाईं। इन क्रमों में पूजनीया शक्तिमयी माता जी, शक्तिस्वरूपा बहन पूजा जी, संध्या जी, ज्योति जी, सिद्धाश्रम चेतनाओं तथा सिद्धाश्रमरत्न अजय अवस्थी जी, सौरभ द्विवेदी 'अनूप' जी और रजत मिश्रा जी की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। परम पूज्य गुरुवर के साथ ही सभी ने गायों को रोटियाँ खिलाकर अपना स्नेह प्रदान किया।

ज़रूरतमन्दों को वस्त्रों का वितरण



पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम ट्रस्ट की प्रधान न्यासी शक्तिस्वरूपा बहन ज्योति शुक्ला जी और सिद्धाश्रमरत्न रजत मिश्रा जी ने नववर्ष के प्रथम दिवस सिद्धाश्रम स्थित निःशुल्क वस्त्र सहायता केन्द्र से ज़रूरतमन्दों को उनकी ज़रूरत के अनुसार स्वेटर, शाल, साड़ी, पैण्ट, शर्ट, कुर्ता, पायजामा आदि वस्त्रों का वितरण किया।

ज्ञातव्य है कि सिद्धाश्रम धाम में हर साल नववर्ष को साधना-सेवा और समर्पण दिवस के रूप में मनाया जाता है; जो स्तुत्य है, अनुकरणीय है।

133वाँ शक्ति चेतना जनजागरण योग साधना शिविर

(सिद्धाश्रम स्थापना दिवस पर्व) 22, 23 जनवरी 2026

पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम, ब्यौहारी, शहडोल, मध्यप्रदेश



सच्चिदानंदस्वरूप ऋषिवर सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के दर्शन पाकर धन्य हुए भक्तगण

आध्यात्मिक नवजागरण से ही वर्तमान की उस ध्वंसलीला से मुक्ति मिल सकती है, जिसकी ओर नशा, विषय-विकारों व भौतिकता से ग्रसित मनुष्य पतन की ओर बढ़ता जा रहा है। मानव की नैतिक और आध्यात्मिक प्रकृति के प्रति प्रबल आग्रह में ही वर्तमान युग के उद्धार की आशा निहित है।

जो लोग अपनी काया, वाणी और चित्त से दुराचरण करते हैं, सही मायने में उन्हें अपने आपसे, अपने 'मैं' से, अपनी आत्मा से प्रेम नहीं है और जो अपनी काया, वाणी और चित्त से सदाचरण के पथ पर अग्रसर रहते हैं, सही मायने में वे ही अपने आपसे, अपने 'मैं' से, अपनी आत्मा से प्रेम करते हैं और ऐसे लोग ही ऋषिवर सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के चिन्तनों को आत्मसात करके कलिकाल की भयावहता से स्वयं के साथ परिवार, समाज व देश को मुक्ति दिला सकते हैं।

शक्तिपीठ के रूप में स्थापित पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम धाम पर सिद्धाश्रम स्थापना दिवस पर्व के उपलक्ष्य में दिनांक 22-23 जनवरी 2026 को सम्पन्न 133वें द्विदिवसीय शक्ति चेतना जनजागरण 'योग साधना' शिविर में धर्मसम्राट् युग चेतना पुरुष सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के शिष्यों-भक्तों व सनातनप्रेमियों का ऐसा प्रवाह उमड़ा कि सम्पूर्ण प्रकृति अंगड़ाई लेने लगी, प्राकृतिक वातावरण में नवीनता दृष्टिगत होने लगी।

शिविर के दोनों दिवस जहाँ शिविरस्थल पर उपस्थित लाखों भक्तों ने सद्गुरुदेव जी महाराज के अमृतमयी वचनों का रसपान कर अध्यात्मपथ पर बढ़ने व मानवता की सेवा, धर्मरक्षा और राष्ट्ररक्षा के लिए दृढ संकल्प लिया, वहीं प्रथम दिवस के प्रथम सत्र में शक्तिस्वरूपा बहनों-पूजा जी, संध्या जी और ज्योति जी के सान्निध्य में योग-ध्यान-साधनाक्रम को पूर्ण किया। इतना ही नहीं, सभी ने दो दिव्य आरतियों का भी लाभ प्राप्त किया। शिविर के द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र में 08 हजार से अधिक नए भक्तों ने परम पूज्य सद्गुरुदेव जी महाराज से दीक्षा लेकर नवीन जीवन में पदार्पण किया।

शिविर की व्यवस्था में भगवती मानव कल्याण संगठन के हजारों स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं ने, जहाँ समस्त भक्तों, श्रद्धालुओं को सुबह-शाम भोजन कराया, वहीं जनसम्पर्क कार्यालय, निःशुल्क शक्तिजल वितरण केन्द्र, निःशुल्क प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र, वस्त्र समर्पण एवं सहायता केन्द्र, मीडिया कार्यालय, खोया-पाया विभाग एवं सभी आगन्तुक भक्तों के ठहरने के लिए आवासीय पंडाल एवं प्रवचनस्थल की व्यवस्था हेतु अथक परिश्रम किया।

शिविर के दोनों दिवसों में नित्यप्रति की तरह सर्वप्रथम ब्रह्ममुहूर्त में भक्तजन मूलध्वज साधना मंदिर पर पूजनीया शक्तिमयी माता जी के करकमलों से सम्पन्न होने वाले आरतीक्रम में शामिल होने के पश्चात् श्री दुर्गार्चालीसा अखण्ड पाठ मंदिर में पहुंचकर माता जगदम्बे के गुणगान में सम्मिलित हुये, जहाँ परम पूज्य सद्गुरुदेव जी महाराज के द्वारा प्रातः 06 बजे स्वयं उपस्थित होकर आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा व सहायक शक्तियों की पूजा-अर्चना, आरती तथा ध्यान-साधना करने के उपरान्त, मूलध्वज साधना मन्दिर पहुंचकर मानवता के कल्याण की कामना सृष्टा माता भगवती आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बे से की। उक्त साधनात्मक क्रमों के बाद प्रातः 07:30 बजे सभी भक्तों ने शिविर पण्डाल में पहुंचकर शक्तिस्वरूपा बहनों के सान्निध्य में योग-ध्यान-साधना के क्रम को एकाग्रतापूर्वक पूर्ण किया।

ज्ञातव्य है कि भगवती मानव कल्याण संगठन एवं पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम ट्रस्ट के सदस्यों व कार्यकर्ताओं के द्वारा सिद्धाश्रम धाम के विशाल परिसर में अथक परिश्रम करके अत्यन्त ही आकर्षक व भव्य मंच तथा वृहदाकार प्रवचन पंडाल का निर्माण किया गया था, जहाँ दो दिवस तक प्रतिदिन निर्धारित समय पर अपराह्न बेला से परम पूज्य सद्गुरुदेव जी महाराज के श्रीमुख से आत्मचिंतन की वर्षा होती रही। चिन्तन के पश्चात् भक्तों ने दिव्य आरती से उत्सर्जित अलौकिक ऊर्जा का लाभ प्राप्त किया।



शक्तिस्वरूपा बहनों पूजा जी, संध्या जी, ज्योति जी के सान्निध्य में योग का क्रम

प्रथम दिवस का द्वितीय सत्र

शक्ति चेतना जनजागरण 'योग साधना' शिविर का प्रथम दिवस, विशाल प्रवचन पंडाल अपार जनसमुदाय से खचाखच भरा हुआ था और सभी अनुशासित रूप से पंक्तिबद्ध बैठे हुये थे। सभी की आँखें सद्गुरुदेव जी महाराज के आगमन की प्रतीक्षा में बिछी हुई थीं, तभी निर्धारित समय में अपराह्न 02:00 बजे

आपश्री के पदार्पण के साथ ही सम्पूर्ण वातावरण जयकारों, शंखध्वनि व तालियों की गड़गड़ाहट से गुंजायमान हो उठा। गुरुवरश्री के मंचासीन होते ही सर्वप्रथम बहन पूजा जी, संध्या जी, ज्योति जी एवं सिद्धाश्रम चेतनाओं के द्वारा समस्त भक्तों की ओर से गुरुवरश्री का पदप्रक्षालन करके पुष्प समर्पित किए गए। तत्पश्चात् कुछ शिष्यों ने भक्तिरस से परिपूर्ण भावगीत प्रस्तुत किये, जिसके मुख्य अंश इस प्रकार हैं:-



सिद्धाश्रम स्थापना दिवस पर्व पर आयोजित शक्ति चेतना जनजागरण 'योग साधना' शिविर ने पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम की छटा को अलौकिक बना दिया था। उस समय अत्यन्त ही मनभावन दृश्य देखने को मिला, जब श्री दुर्गाचालीसा अखण्ड पाठ मंदिर से प्रातःकालीन आरतीक्रम सम्पन्न करके मूलध्वज साधना मंदिर में नवीन शक्तिध्वज के रोहण के पश्चात् परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज और पूजनीया शक्तिमयी माता जी रथ वाहन से सिद्धाश्रम के विशाल परिसर में हाथ जोड़कर खड़े अपार जनसमुदाय को आशीर्वाद प्रदान करते हुए धीरे-धीरे बढ़ रहे थे।

दर्शन एवं आशीर्वाद के अभिलाषी भक्तगण परम पूज्य गुरुवरश्री और शक्तिमयी माता जी से शुभाशीर्वाद प्राप्त करके भावविभोर हो उठे, सभी के चेहरों पर ऐसी प्रसन्नता झलक उठी, जैसे कि उन्हें कोई खजाना मिल गया हो।



शिविरार्थियों को सम्बोधित करती हुई
शक्तिस्वरूपा बहन संध्या शुक्ला जी



सत्य पर आधारित स्वरचित काव्य प्रस्तुत
करते हुए सिद्धाश्रमरत्न सौरभ द्विवेदी जी

सारी दुनिया में हमने देख लिया, माँ के जैसा कोई दरबार नहीं- जमुना जी, सागर। हे दुःखहारी करते दूर दुःख, शीतलता देने जन-जन को, स्वयं चले अंगारों पर-बाबूलाल विश्वकर्मा जी, दमोह। कार्यक्रम का संचालन करते हुए भगवती मानव कल्याण संगठन के केन्द्रीय प्रचारमंत्री वीरेन्द्र दीक्षित जी के द्वारा गुरुचरणों पर प्रस्तुत भावसुमन-गुरुवर के दरश पाकर हम धन्य होगए, आशीष पाकर प्यारा हम प्रसन्न होगए।

भावगीतों की प्रस्तुति के पश्चात् शक्तिस्वरूपा बहन संध्या शुक्ला जी ने सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज की महिमा का वर्णन करते हुए कहा कि “हमारे धर्मशास्त्रों में, वेदों में, पुराणों में उद्धृत है कि साधु सन्तों के, ऋषियों के दर्शन प्राप्त होजाएँ, मंदिरों में स्थापित दिव्य चेतनाओं की प्रतिमाओं के दर्शन होजाएँ, तो अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है और पूर्व के पाप नष्ट होजाते हैं। तो भाईयों-बहनों, हमारे सामने स्वयं सच्चिदानंदस्वरूप ऋषियों के ऋषि श्री शक्तिपुत्र जी महाराज साक्षात् बैठे हैं और मैं आप लोगों को विश्वास दिलाती हूँ कि उनका दर्शन करते ही आपके द्वारा जो पूर्व में पाप हुए होंगे, सब क्षय हो चुके हैं, आपके सभी पाप नष्ट होगए हैं।

जन्मों-जन्मों में एक ऋषि की यात्रा प्राप्त होती है,

किसी चेतनावान् गुरु की यात्रा प्राप्त होती है और हमारे लिए यह परम सौभाग्य की बात है कि हमें ऐसे गुरुवर प्राप्त हुए हैं, जिन्होंने अपने तप, त्याग, ध्यान, साधना और पुरुषार्थ से ऐसे शक्तिसाधक, शक्तिसाधिकाएं तैयार किए हैं, जो समाज में परिवर्तन लाने के लिए, समाज को चेतनावान् बनाने के लिए सतत प्रयासरत हैं। आओ इस आध्यात्मिक यात्रा से जुड़ जाओ। यह यात्रा अहंकार का त्याग करने और समर्पण की यात्रा है और यह यात्रा आपको संस्कारवान, धर्मवान व कर्मवान बनाएगी। यह यात्रा समाज को नशे-मांसाहार से मुक्त चरित्रवान् व चेतनावान् बनाने की यात्रा है, योग-ध्यान-साधना और आयुर्वेद के माध्यम से आपको स्वस्थ व जीवंत बनाए रखने की यात्रा है।

परम पूज्य सद्गुरुदेव जी से यही कामना करें कि हे गुरुदेव, हमें भक्ति, ज्ञान और आत्मशक्ति का आशीर्वाद प्रदान करें।”

ऋषिवर के दिव्य चिन्तन

‘माँ’-ॐ बीजमंत्रों के उच्चारण के पश्चात् ऋषिवर सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज ने उपस्थित शिष्यों-भक्तों, श्रद्धालुओं, कार्यकर्ताओं, देशवासियों व विश्व के धर्मप्रेमी



परम पूज्य सद्गुरुदेव जी महाराज के पदप्रक्षालन का क्रम

जनमानस को आशीर्वाद प्रदान किया और आपश्री की वाणी मुखरित हो उठी—

“आप लोगों को यह समझना चाहिए कि जीवन का हर पल महत्त्वपूर्ण होता है, अतः प्राप्त समय को व्यर्थ न गवाएं। समय कोई अच्छा या बुरा नहीं होता, बल्कि अच्छा या बुरा इस बात पर निर्भर करता है कि आप अपने समय का सदुपयोग कर रहे हैं या दुरुपयोग। यदि आप चाहें, तो अच्छे कर्मों के द्वारा अपने समय के हर पल को सदुपयोगी बना सकते हैं। यह समय आध्यात्मिक विचारधारा पर चलने वालों के लिए अत्यन्त शुभ व कल्याणकारी है, अतः साधनापथ पर चलें, समय का सदुपयोग करें और अपने जीवन को सुन्दर व सुखद बना लें।

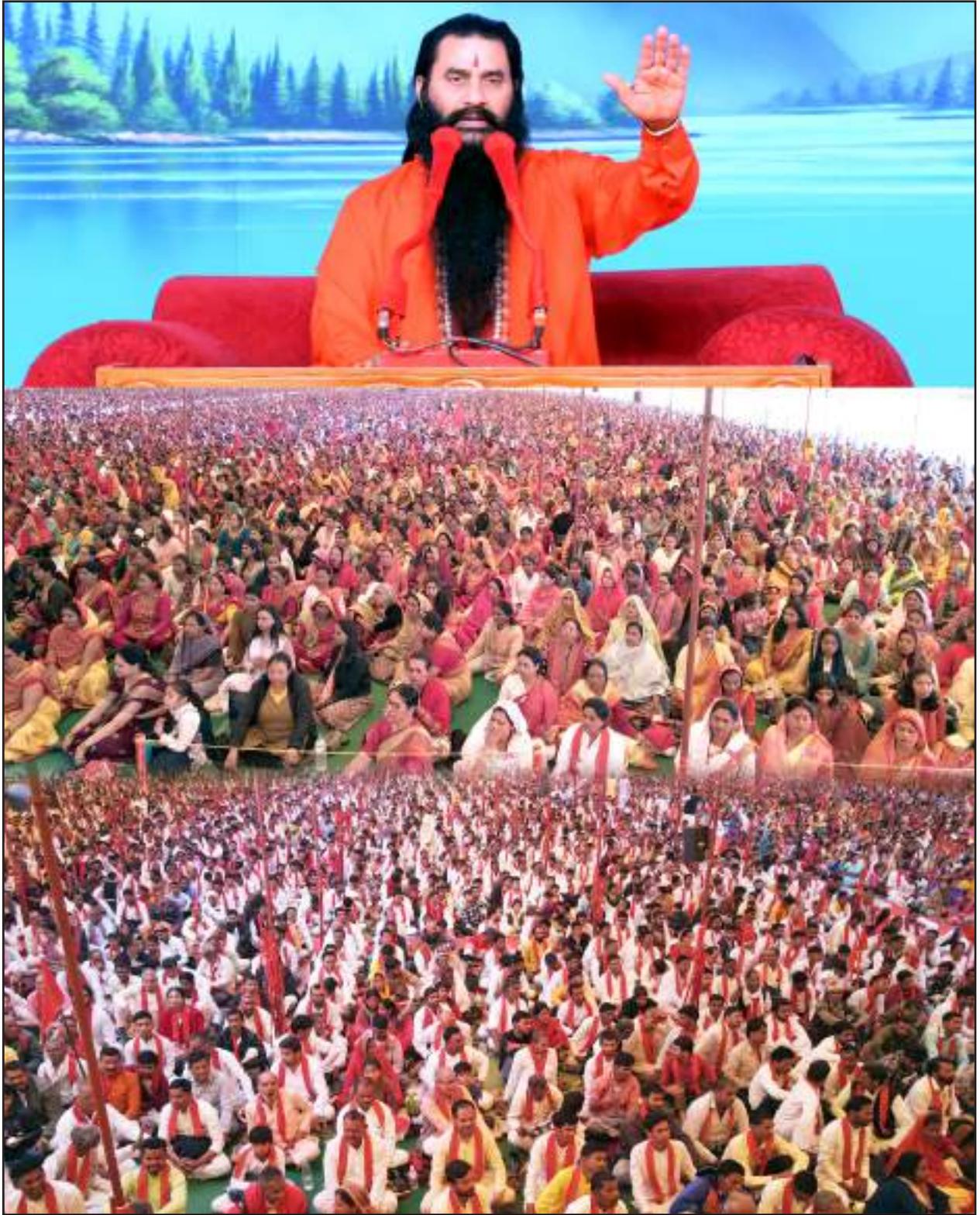
जिस विचारधारा पर आप लोगों को बढ़ाया जा रहा है, निष्ठा विश्वास के साथ उस विचारधारा को कर्मरूप में परिणत करें। जीवन में यदि कुछ प्राप्त करना है, तो केवल आशीर्वाद से प्राप्त नहीं होगा, अपितु उसके लिए कर्म करना पड़ेगा,

प्रयास करना पड़ेगा। यद्यपि आशीर्वाद मिलना ज़रूरी है, विश्वास का फल प्राप्त होता है, मगर विश्वास के साथ प्रयास की आवश्यकता है। आप प्रयास न करें और केवल विश्वास को लेकर बैठ जाएं कि हम तो ‘माँ’ के भक्त हैं, गुरुवर के शिष्य हैं, हमें क्या करना? बस हम गुरुवर का स्मरण करते रहें, हमारा जीवन बदल जायेगा, तो यह सम्भव नहीं है। कुछ पाने के लिए प्रयास करना ही पड़ेगा।

हमारे समाज का सतत पतन इसीलिए हुआ कि कर्म को महत्त्व नहीं दिया गया, पुरुषार्थ को महत्त्व नहीं दिया गया। अपने जीवन को बदलना होगा, धर्ममय और कर्ममय बनाना होगा। कलिकाल के प्रभाव से आप

लोग इन्द्रियों के गुलाम बन चुके हो और यह गुलामी पतन की ओर केवल पतन की ओर ले जायेगी। आज जो संघर्ष आपके जीवन में हैं, यदि यही चलता रहा, तो आपकी संतति को और कठिन संघर्ष सहने पड़ेंगे। इस संघर्ष से निकल सकते हो, अपनी संतति को भीषण संघर्ष से बचा सकते हो और इसके लिए आपको एक विचारधारा दी गई है, जिसका पालन करने की आवश्यकता है।

योग से आपका जीवन बदल सकता है, लेकिन एक दिन योग करने से कुछ नहीं होने वाला, अपितु इसे सतत अपनाने की ज़रूरत है। हमारे शरीर में निखिल ब्रह्मांड समाहित है, फिर भी दीन-हीनों का जीवन जी रहे हो! अनीति-अन्याय-अधर्म के बीच ऐसे फंस गए हो कि अपने आपको उसमें समाहित सा महसूस करते हो। झाड़-झंखाड़ों के बीच कोई खिला हुआ पुष्प नज़र नहीं आता, मगर यदि हम वहाँ भी चाहें, तो पुष्प खिला सकते हैं, वहाँ पुष्पमय बगिया बन सकती है, केवल एक प्रयास की ज़रूरत है।



योग साधना शिविर में चिंतन प्रदान करते हुए परम पूज्य सद्गुरुदेव
श्री शक्तिपुत्र जी महाराज एवं चिंतन श्रवण करते हुए लाखों शिष्य व भक्त

आप लोगों को जो आत्मावान बनाने की यह यात्रा चल रही है, उसमें रच-बस जाओ। यदि मैं भी चाहूँ, तो धर्मशास्त्रों को लेकरके, वेद-पुराणों को लेकरके किस्से-कहानियाँ सुनाता रहूँ, मगर मैंने माता भगवती आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा के चरणों के पास बैठ करके उस रास्ते का चयन किया, जिस रास्ते पर चल करके समाज का कल्याण किया जा सकता है। समाज को वर्तमान में किस्से-कहानियों की आवश्यकता नहीं है, अपितु तपस्वी बनाने की, साधक बनाने की आवश्यकता है, जिससे सामाजिक जीवन में परिवर्तन आ सके। मानवजीवन की उम्र घटती जा रही है, शारीरिक क्षमताएं घटती जा रही हैं, बौद्धिक क्षमताएं घटती जा रही हैं, अनीति-अन्याय-अधर्म का साम्राज्य चारों तरफ फैलता चला जा रहा है और यदि इस साम्राज्य को समाप्त करना है, तो सत्य की यात्रा तय करनी ही पड़ेगी।

अधिकांश कथावाचक हैं कि उन्हें इससे कोई मतलब ही नहीं है, वे तो ढोंग-पाखंड में रचे-बसे हुए हैं, उन्हें केवल पैसों की भूख है, सम्मान की भूख है! लेकिन आपके गुरु ने इसके विपरीत रास्ते का चयन किया है, अग्नि के पथ का चयन किया है, साधना के पथ का चयन किया है, आवश्यकता न होते हुए भी अपने जीवन को तपाया है, जिससे मैं समाज को बता सकूँ कि मेरा साधनात्मक जीवन है। अन्यथा, आपके गुरु ने विश्वअध्यात्मजगत् को अपने साधनात्मक तप-बल की चुनौती दी है कि सभी साधु-संत-संन्यासी एक पक्ष में आकर खड़े हो जाएं और 'माँ' का यह रजकण एक पक्ष में खड़ा होने के लिए तैयार है। वे दुनियाभर के जितने चमत्कार दिखाते हैं, उनसे सैकड़ों गुना अधिक चमत्कार मैं दिखा दूंगा। एक स्थान पर रह करके दुनिया के किसी कोने की जानकारी देने की बात हो, या किसी को डॉक्टरों ने कह दिया हो कि इसे नहीं बचाया जा सकता, तो 'माँ' शक्ति के बल पर उसे निरोगी काया प्रदान कर सकता हूँ।

यदि आपका गुरु भी चाहता, तो मान-सम्मान भोगने के रास्ते का चयन कर सकता था और वहीं साधु-संत-संन्यासी मेरे चरणों में झुके हुए होते, मगर मेरा यह रास्ता था ही नहीं। मैंने

एकान्त साधनाओं को ज़्यादा महत्त्व दिया और एक के बाद एक साधनाओं को पूर्ण किया। चूँकि मैं जानता था कि समाज को दिशा देनी पड़ेगी और तभी लोगों के जीवन में परिवर्तन आ सकेगा। हमारी यात्रा लम्बी है, लेकिन मैं अपने शिष्यों को खजूर के पेड़ की तरह नहीं बढ़ाना चाहता, बल्कि उन्हें वटवृक्ष बनाना चाहता हूँ। एक ऐसा वटवृक्ष, जिसकी जड़ों को गिनने वाले गिनते रहें, मगर गिन ही न पाएं कि कहाँ से प्रारम्भ हुआ है और कहाँ पर अन्त है?

शाश्वत सुख क्या है? ऐसा सुख, जो एकबार प्राप्त हो जाए, तो उसे कोई नष्ट न कर सके और यह सुख आत्मिक सुख है। हम बाह्य जगत् में जो भी सम्बंध स्थापित करते हैं, आत्मिकशक्तियों के बल पर करते हैं और यदि आत्मिकशक्ति कम होगी, तो न भौतिक जगत् का सुख प्राप्त होगा और न ही आध्यात्मिक सुख को समझ पाओगे। इसलिए आवश्यकता है कि पहले स्वयं को अध्यात्म से जोड़ो और फिर अपने बच्चों को आध्यात्मिक संस्कार दो। आपके बच्चे संस्कारवान होंगे, तो वे किसी भी क्षेत्र में सफलता अर्जित कर सकते हैं।

मैं आप लोगों को बताना चाहता हूँ कि भगवती मानव कल्याण संगठन, पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम और भारतीय शक्ति चेतना पार्टी, त्रिवेणी के समान हैं, जिसमें समाहित है माता भगवती आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा की पूर्ण कृपा, जिसमें समाहित है एक ऋषि का पूर्ण आशीर्वाद और इस पर चल करके मेरे शक्तिसाधक व शक्तिसाधिकाएं पूर्णत्व को प्राप्त करेंगे। भटकाव से अलग हट करके उस सत्य को समझने का प्रयास करो, सत्य की पूँजी को अर्जित करने का प्रयास करो। अपने आहार के प्रति सजग रहो, आपका आहार शुद्ध-सात्विक होना चाहिए। आपका आहार जितना शुद्ध-सात्विक होगा, उसी तरह आपके विचार बनते चले जाएंगे और यदि विचार अच्छे होंगे, तो आपका व्यवहार अहंकाररहित सात्विक होगा। अतः आहार, विचार, व्यवहार के प्रति हमेशा सजग रहो।

आप लोगों को यदि भक्ति प्राप्त करना है, तो तुलसीकृत श्रीरामचरितमानस को पढ़ो, यदि ज्ञान प्राप्त करना है, तो



योग साधना शिविर में मंचासीन पूजनीया महातपस्विनी शक्तिमयी माता जी

बाल्मीकिकृत रामायण पढ़ो और यदि कर्मपथ पर बढ़ना है, तो श्रीमद्भागवत गीता पढ़ो। यदि इन ग्रन्थों को पढ़ लो, तो आपके अन्दर माता आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बे के प्रति भक्तिभावना प्रबल हो उठेगी, उनके प्रति अगाध भक्ति उत्पन्न हो जाएगी।

सनातनधर्म अपनी गति से आगे बढ़ रहा है और हमें समाज को जगाते रहना है। ढोंग-पाखण्ड से अपने आपको दूर रखें तथा सच्चे मन से अपनी इष्ट, अपनी आत्मा की जननी माता जगदम्बे की आराधना करें। आप लोगों को सरल से सरल जो मन्त्र बताए गए हैं, उनका नित्यप्रति जाप करो। नित्यप्रति शक्तिजल का पान करो, नशे-मांसाहार से मुक्त रहो, चरित्रवान् जीवन धारण करो। अपने जीवन में ब्रह्मचर्य की ताकत को बढ़ाओ। ब्रह्मचर्य केवल विकारात्मक चीजों से बचे रहने भर के लिए नहीं कहा जाता, बल्कि ब्रह्मचर्य यानी प्रकृति के नियमों के अनुरूप अपने आपको ढालो, समय पर जागो, साधना-आराधना करो, आपका भोजन शुद्ध-सात्विक हो। आपके जीवन में कोई समस्या आ

जाए, तो तनावग्रस्त मत होजाओ, अपितु पुरुषार्थ के बल पर समस्याओं का समाधान करो।

मैं युवाओं का आवाहन करता हूँ कि यदि तुम्हारे अन्दर धर्म, राष्ट्र, मानवता की सेवा के लिए कोई भी इच्छाशक्ति है, तो ब्रह्मचर्य का जीवन जीते हुए इस दिशा में आगे बढ़ो। यह काल कुछ कर गुज़रने का है, यह शक्ति का युग है, यह कर्म का युग है। दीन-हीन बनकर जीवन जीने का यह काल नहीं है। अपने अन्दर ऐसी सच्चाई, ऐसी ईमानदारी की ताकत पैदा करो, जो युगों-युगों तक समाज को दिशा देती चली जाए। हमारी आत्मा अजर-अमर-अविनाशी है। हम एक जन्म नहीं, अनेक जन्म लें, तो हर जन्म में उन्नति के पथ पर जाएं, ऐसी दृढ़ इच्छाशक्ति अपने अन्दर पैदा करो।”

ऋषिवर के दिव्य चिन्तन के उपरान्त, सभी भक्तों ने ‘माँ’ - गुरुवर की दिव्य आरती का लाभ प्राप्त कर श्रीगुरुचरणपादुकाओं का स्पर्श करके एवं प्रसाद लेकर माँ अन्नपूर्णा भंडारा परिसर की ओर प्रस्थित हुए।



शिविर में उपस्थित शक्तिस्वरूपा (बहन पूजा दीदी, बहन संध्या दीदी, बहन ज्योति दीदी),
सिद्धाश्रम चेतना (आरुणी जी, अद्वैत जी, आत्रेय जी, अधीश जी),
सिद्धाश्रमरत्न (अजय अवस्थी जी, सौरभ द्विवेदी जी, रजत मिश्रा जी एवं आशीष शुक्ला जी)

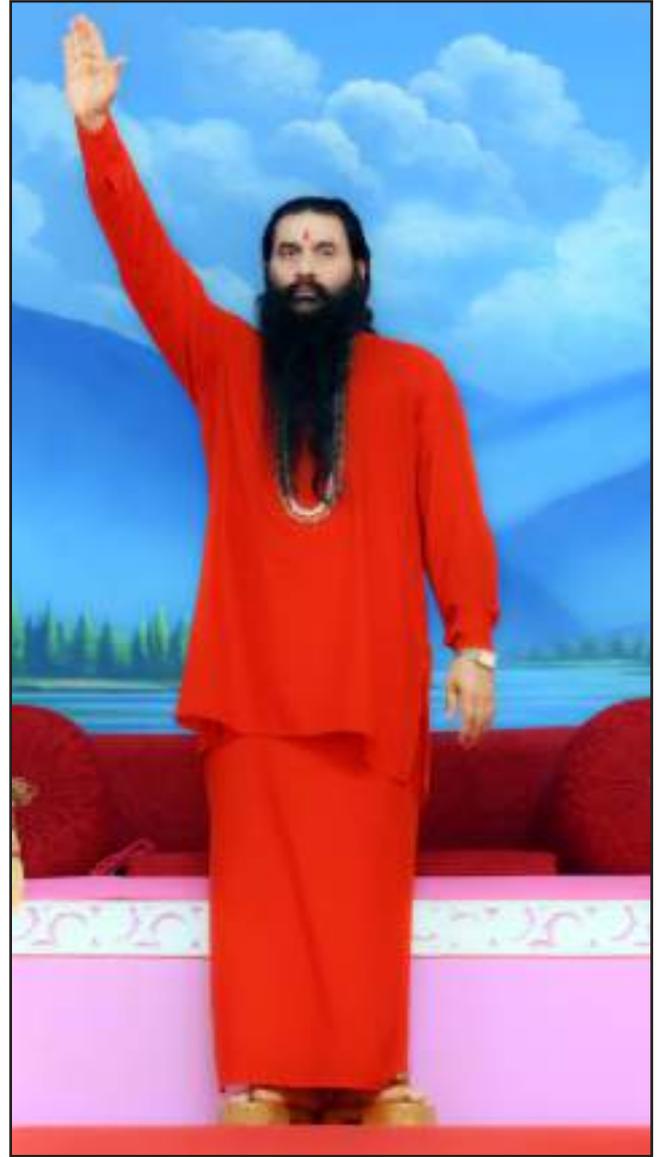
द्वितीय दिवस का प्रथम सत्र

08 हजार से अधिक नये भक्तों ने ली गुरुदीक्षा

शक्ति चेतना जनजागरण शिविर के द्वितीय दिवस का प्रथम सत्र, मंचस्थल पर प्रातः 07:30 बजे से गुरुदीक्षा का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर 08 हजार से अधिक नये भक्तों ने गुरुदीक्षा प्राप्त करके विकारों से मुक्त नवीन जीवन, धर्ममय और कर्ममय जीवन का सूत्रपात किया। दीक्षा प्रदान करने से पूर्व गुरुवरश्री ने कहा कि “जब किसी चेतनावान् गुरु से दीक्षा प्राप्त करने का समय होता है, तो वे क्षण मानवजीवन के सबसे महत्त्वपूर्ण क्षण होते हैं और आज तो ज्ञान का दिवस है, बसंत पंचमी है, माता सरस्वती का प्रकाट्य दिवस है, ऐसे पावन क्षणों में इस दिव्यधाम में आप लोग दीक्षा प्राप्त कर रहे हैं, आप लोगों का इससे बड़ा सौभाग्य और कुछ हो ही नहीं सकता। गुरु और शिष्य का रिश्ता एक ऐसा अटूट रिश्ता है, जो इस भूतल के समस्त रिश्तों से सर्वोपरि है। यही वह रिश्ता है, जो आत्मिक होता है। जबकि, भौतिक जगत् का ऐसा कोई रिश्ता नहीं, जो कि स्वार्थ से न जुड़ा हो।”

परम पूज्य गुरुवरश्री ने कहा कि “आज से, अभी से संकल्पबद्ध हो जाओ कि मैं नशे-मांसाहार से मुक्त चरित्रवान् जीवन जिऊंगा, धर्म, राष्ट्र व मानवता की रक्षा करूंगा। मेरा शिष्य वही कहलाएगा, जो नशे का सेवन नहीं करेगा, जो मांस का सेवन नहीं करेगा, जो चरित्रहीनता का जीवन नहीं जियेगा तथा जो धर्म, राष्ट्र और मानवता की रक्षा के प्रति समर्पित रहेगा।”

ऋषिवर सद्गुरुदेव परमहंस योगीराज श्री शक्तिपुत्र जी महाराज ने कहा कि, “मैं शक्तिपात के माध्यम से सभी को अपनी चेतना से आबद्ध करते हुये, जो जिस अवस्था में है, उसे स्वीकार करता हूँ।” आपश्री ने सहायक शक्तियों हनुमान जी, भैरव जी एवं गणेश जी के मंत्र के साथ चेतनामंत्र ‘ॐ जगदम्बिके दुर्गायै नमः’ एवं गुरुमन्त्र ‘ॐ शक्तिपुत्राय गुरुभ्यो नमः’ प्रदान किया। अंत में सभी नये दीक्षाप्राप्त शिष्यों ने सद्गुरुदेव जी महाराज को नमन करते हुये निःशुल्क शक्तिजल



शिविर में उपस्थित शिष्यों-भक्तों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए परम पूज्य गुरुवरश्री

प्राप्त किया और फिर मूलध्वज साधना मंदिर जाकर मंदिर की परिक्रमा की, तत्पश्चात् अन्नपूर्णा भंडारा परिसर में जाकर खिचड़ी प्रसाद ग्रहण करके तृप्त हुए।

द्वितीय दिवस का द्वितीय सत्र

शक्ति चेतना जनजागरण ‘योग साधना’ शिविर आयोजनस्थल की और मंच की शोभा देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो प्रकृतिसत्ता की असीम कृपा सिद्धाश्रम धाम में बरस रही हो।



सिद्धाश्रम स्थापना दिवस पर हजारों नवीन भक्तों को गुरुदीक्षा प्रदान करते हुए परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज

द्वितीय दिवस की अपरान्ह बेला, मंच पर विराजमान सद्गुरुदेव जी महाराज के त्याग-तपस्या और भक्ति के आलोक से आलोकित आभामंडल को अपलक देखते हुये भक्तगण मुग्ध हो रहे थे कि तभी भावगीतों व काव्यपाठ का क्रम प्रारम्भ हुआ। भावगीतों के प्रारम्भिक अंश इस प्रकार हैं—

अपनी-अपनी मंजिल पा लो, करो न ज़्यादा रेस्ट। जगत् में हर प्राणी है व्यस्त, हर प्राणी है व्यस्त-वीरेन्द्र दीक्षित जी, दतिया। आज स्थापना दिवस है आया, मन में एक विचार है आया-बाबूलाल विश्वकर्मा जी, दमोह।

सिद्धाश्रमरत्न सौरभ द्विवेदी 'अनूप' जी के द्वारा परम पूज्य गुरुवरश्री के अतिसंघर्षपूर्ण अखण्ड संकल्प को लेकर प्रस्तुत काव्यपाठ को श्रोतागण शांत, मौन सुनते चले गए। सत्य पर आधारित प्रस्तुत काव्य पाठ—

दिन अपनी जगह रही और रात अपनी जगह, गुरुदेव जी बढ़ते रहे नित्य और बाकी सारी की सारी बात अपनी जगह। एक वह भी दिन था जब आपका इस स्थान पर आगमन हुआ था, वह वैसा ही था जैसा धरती पर आसमान का आगमन हुआ था। तय होगया था तभी कि यहाँ आकर सारा संसार झुकेगा और झुकता भी क्यों नहीं, यहाँ भगवान् का आगमन हुआ था। दुनियाभर में मिल रही धन-वैभव की सारी सौगात अपनी जगह और गुरुदेव जी नित्य बढ़ते रहे, दुनिया की सारी बात अपनी जगह।

खड़े होने, चलने, बैठने और सोने के अनुकूल दूर-दूर तक कोई स्थान नहीं था, पर गुरुदेव जी में उत्साह इतना प्रबल था कि मन जरा भी परेशान नहीं हुआ। गुरुदेव जी थे, उनका दृढ़ संकल्प था और कुछ चन्द शिष्यगण थे तथा दूर-दूर तक साथ निभाने को एक भी इंसान नहीं था। अखंड पुरुषार्थ प्रारम्भ हुआ और....।

ऋषिवर के दिव्य चिंतन

आशीर्वाद प्रदान करने के बाद ऋषिवर की अमृतमयी वाणी मुखर हो उठी—

“हर मनुष्य अपना लक्ष्य निर्धारित करता है। कुछ उस लक्ष्य तक पहुंच जाते हैं, कुछ बीच में रुक जाते हैं और

कुछ लक्ष्य निर्धारित करके ही रह जाते हैं, आगे बढ़ ही नहीं पाते। मनुष्यजीवन को प्राप्त करने के लिए देवता भी तरसते हैं। इसलिए कि मनुष्यजीवन को प्राप्त करके ही आध्यात्मिक उच्चता की ओर, ऋषित्व की ओर बढ़ा जा सकता है। हर मनुष्य के अन्दर निखिल ब्रह्मांड समाहित है। हमारे अन्दर वह दिव्य आत्मचेतना बैठी हुई है, जिसमें सबकुछ समाहित है और उस आत्मचेतना को लेकरके भी आज का समाज दीन-हीनों का जीवन जी रहा है! इसलिए कि बाहर की ओर ही देखने का प्रयास किया गया और अपने अन्तःकरण को देखने का कभी प्रयास ही नहीं किया गया। समाज ने अपने अन्दर की शक्तियों को कभी जगाने का प्रयास ही नहीं किया। हमारे अन्दर इतनी अद्भुत शक्तियाँ हैं कि उन्हें जगाकर स्वयं का कल्याण तो कर ही सकते हैं, करोड़ों-करोड़ लोगों का कल्याण कर सकते हैं। अनेक ऋषियों ने, मुनियों ने, साधक-साधिकाओं ने यह करके दिखाया है।

यह यात्रा कोई नई यात्रा नहीं है और मैंने माता भगवती आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा के चरणों के पास बैठकर इस यात्रा का चयन स्वयं किया है। यह यात्रा समाज के लिए कठिनाईयों से भरी होगी, लेकिन मेरे लिए यह यात्रा कठिनाईयों से युक्त होने के बाद भी आनन्द से भरी हुई है। दयालु, कृपालु वह मेरी 'माँ' हर क्षण, हर संघर्ष में मेरा साथ देती रहीं और एक क्षण के लिए भी मुझे व्यथित नहीं किया। लक्ष्य को प्राप्त किए बिना वर्तमान में भी विश्राम नहीं करना। मैंने अपने जीवन में कभी भी ठहरने का, विश्राम का निर्णय लिया ही नहीं! हमारा लक्ष्य पावन है, पवित्र है। वह लक्ष्य माता जगदम्बे ने हमें और आपको प्रदान किया है। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें एक ऐसा महान लक्ष्य प्राप्त हुआ है कि उससे इस कलिकाल में मानवता का कल्याण होना है, समाज को एक दिशा प्राप्त होनी है। अभी तो हम प्रारम्भिक स्थिति में चल रहे हैं, लक्ष्य तक पहुंचना अभी बहुत दूर है। अभी तो 100 महाशक्तियज्ञ पूर्ण होने हैं और एक-एक यज्ञ में 11-11 दिन लगते हैं। समाज को दिशा-निर्देशन देते हुए इन यज्ञों को पूरा करना है।

आज प्रवचनकर्ता, तथाकथित धर्माधिकारी क्या कर



दिव्य आरती की अलौकिक अनुभूति

शक्तिस्वरूपा बहनों पूजा जी, संध्या जी, ज्योति जी और सिद्धाश्रम चेतनाओं आरूणी जी, अद्वैत जी व आग्नेय जी के द्वारा उपस्थित समस्त भक्तों की ओर से दोनों दिवस 'माँ'-गुरुवर की दिव्य आरती सम्पन्न की गयी। उस समय का वातावरण अत्यंत ही स्निग्ध, भक्तिमय और प्रवाहित चेतना तरंगों की अनुभूति की अलौकिकता उपस्थित सभी भक्तों के रोम-रोम को पुलकित कर रही थी। दिव्य आरती की अलौकिक अनुभूति प्राप्त करके सभी शिविरार्थी धन्य हुए।

रहे हैं? लोगों को भ्रमित कर रहे हैं। कहते हैं कि कलियुग में बस नाम आधारा। अरे, केवल नाम के गान से कुछ कल्याण नहीं होने वाला। कर्म करना पड़ेगा, कर्मवान बनना पड़ेगा। यह कलियुग कर्म का युग है। मुझे बताओ कि यदि किसी कुएं में गिर जाओगे, तो केवल नाम लेने से कुएं से बाहर निकल आओगे? नहीं, बल्कि पुरुषार्थ करना पड़ेगा, बाहर के लोगों का सहारा लेना पड़ेगा, कुएं से निकलने के लिए प्रयास करना पड़ेगा। आज आवश्यकता है मन्त्रों का जाप करने की, उन बीजमंत्रों का जाप करने की, जिनके जाप करने से आपकी चेतनाशक्ति प्रभावक होगी, आपके अंदर दिव्यतरंगें प्रभावक होंगी, आपकी कार्यक्षमता बढ़ेगी।

कहते हैं कि पंचतत्त्वों को भगवान् मानो! यानी पंचतत्त्व भगवान् हैं और कोई नहीं! इतना तो अहसास होना चाहिए, विज्ञान भी बता रहा है, हमारे धर्मग्रंथ भी बता रहे हैं कि पंचतत्त्वों

से हमारा यह शरीर निर्मित है। पंचतत्त्व में तत्त्व शब्द जुड़ा हुआ है और इससे हमारे स्थूल का निर्माण हुआ है, न कि हमारी आत्मा का निर्माण हुआ है। अरे, हमारी आत्मा पंचतत्त्वों से परे है, जो माता भगवती आदिशक्ति जगत् जननी जगदम्बा का अंश है और उसी चेतना से हमारा यह शरीर संचालित है। समाज को मूल ज्ञान दिया ही नहीं जा रहा है। कथावाचकों का बस एक ही काम है लोगों को नचाओ, रास रचाओ और पैसा एकत्रित करो! इसीलिए समाज भटकता चला जा रहा है। इसीलिए मेरे द्वारा कहा जाता है कि गहराई में जाओ, जड़ों में जाओ कि हमारे ऋषि-मुनि किन देवी-देवताओं की आराधना करते थे?

जगत् जननी, जो हमारी आत्मा की जननी हैं, उनको विस्मृत करते जा रहे हैं, त्रिदेवों को भूलते चले जा रहे हैं, माता महासरस्वती, माता महालक्ष्मी, माता महाकाली को भूलते चले जा रहे हैं, जिनकी साधना-आराधना हमारे ऋषि-मुनि करते थे।

क्या हमारे ऋषि-मुनि अल्पज्ञ थे? अरे, वे ज्ञान की पराकाष्ठा का जीवन जीते थे और जिनके पास नए स्वर्ग के निर्माण की क्षमता थी। वे त्रिकालज्ञ थे और उनकी वाक्शक्ति इतनी प्रबल थी कि जो कहते थे, वह होता था। उनके पास किसी के जीवन को नष्ट कर देने और नष्ट हो रहे जीवन को पुनर्जीवन देने की क्षमताएं थीं।

कहते हैं कि प्रारब्ध को बदला नहीं जा सकता, प्रारब्ध को भोगना ही पड़ेगा। मैं कह रहा हूँ कि प्रारब्ध को बदला जा सकता है और हर काल में बदला गया है। मूर्ख हैं वे लोग, जो कहते हैं कि प्रारब्ध को नहीं काटा जा सकता, प्रारब्ध को नहीं बदला जा सकता। हर काल में बदला गया है और बदला जा सकता है, स्वयं के पुरुषार्थ के माध्यम से, स्वयं की साधना के माध्यम से, चेतनावान् गुरु के माध्यम से। एक चेतनावान् गुरु अपनी तपस्या के माध्यम से आपके प्रारब्ध को बदल सकता है।

कुछ प्रवचनकर्ता, कुछ धर्माधिकारी सनातनधर्म की रक्षा की बात करते हैं। अरे, सनातनधर्म की रक्षा ऐसे नहीं हो सकती। यदि सनातनधर्म की रक्षा करनी है, तो हमें साधनात्मक जीवन जीना पड़ेगा, तपस्वी बनना पड़ेगा, अपने देवी-देवताओं पर पूर्ण निष्ठा, विश्वास रखना पड़ेगा। देवी-देवताओं की साधना करनी पड़ेगी, जिनकी साधना करके पूर्व के कालों में अनेकानेक लोगों द्वारा दिव्यशक्तियाँ अर्जित करके स्वयं के साथ समाज का भी कल्याण किया गया है। भगवान् श्रीराम ने भी शिव की आराधना की थी, रामेश्वरम में उनके द्वारा शिवलिंग की स्थापना की गई। क्या वे अज्ञानी थे? आज के साधु-संत-संन्यासी, कथित धर्माधिकारी और प्रवचनकर्ता नाना प्रकार के भटकाव की बातें करते रहते हैं। राजनीति के क्षेत्र में भी कुछ राजनेता अनर्गल प्रलाप करते रहते हैं, उनके द्वारा देवी-देवताओं को लेकर अपमानजनक टिप्पणियाँ की जाती हैं!





सभी भक्तों ने किया अन्नपूर्णा भंडारे में तृप्तिपूर्ण भोजन

दिनांक 22-23 जनवरी को आयोजित शक्ति चेतना जनजागरण 'योग साधना' शिविर में पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम पहुंचने वाले भक्तों के लिये सुबह-शाम निःशुल्क भोजन प्रसाद की व्यवस्था अन्नपूर्णा भोजनालय में रही। गुरुवरश्री के आशीर्वाद से विशाल परिसर में भण्डारे की व्यवस्था की गई थी। सभी भक्तों ने दोनों समय भोजनालय परिसर में पंक्तिबद्ध रूप से बैठकर तृप्तिपूर्ण भोजन प्रसाद ग्रहण किया। इस वृहद व अतिमहत्त्वपूर्ण व्यवस्था की जिम्मेदारी का निर्वहन हजारों परिश्रमी समर्पित कार्यकर्ताओं के द्वारा दिन-रात अथक परिश्रम से पूर्ण किया गया।

सत्य से कोई दूर जाएगा, तो उसका विनाश सुनिश्चित है। आज समाज में जो राजनीतिक पार्टियाँ देवी-देवताओं को लेकर अपमानजनक टिप्पणियाँ कर रही हैं, समाज में जो जातपात के नाम पर विष घोल रही हैं, उन्हें एक-न-एक दिन गिरकर धूल चाटनी पड़ेगी। सत्य करवट ले रहा है, परिवर्तन का चक्र चल चुका है। अनेक स्थानों पर, अनेक परिवारों में शक्ति चेतनाएं जन्म ले रहीं हैं। 30-35 वर्ष पूर्व मेरे द्वारा कहा गया था कि अपने आपको, अपने परिवार को दिव्य बनाओ, साधना के क्षेत्र में बढ़ो, फिर देखोगे कि तुम्हारे परिवारों में दिव्य चेतनाएं जन्म लेंगी। उस दिशा में आप सभी को बढ़ने की ज़रूरत है।

मन की एकाग्रता में बहुत बड़ी ताकत है, विपश्यना साधना करो। जब प्रातः उठो, तो विचार करो कि परमसत्ता ने मुझे नया जीवन दिया है, इसे मुझे अच्छे से व्यतीत करना है। रात्रि में सोने से पहले दिनभर के अपने कार्यों का आकलन करो कि कहीं मुझसे कुछ गलत तो नहीं हुआ है? यदि भूल से भी कुछ गलत होगया हो, तो अगले दिन उस गलती को सुधारने का प्रण लो और परमसत्ता को अपनी स्मृति में बसाकर, परमसत्ता के चरणों में अपने आपको समर्पित करके सो जाओ। यदि विपश्यना साधना करते हुए नींद में जाओगे, तो अच्छी नींद आएगी और अच्छे व सकारात्मक स्वप्न आएंगे तथा जब प्रातः उठोगे, तो



पूज्य दण्डी संन्यासी समाधि दर्शन

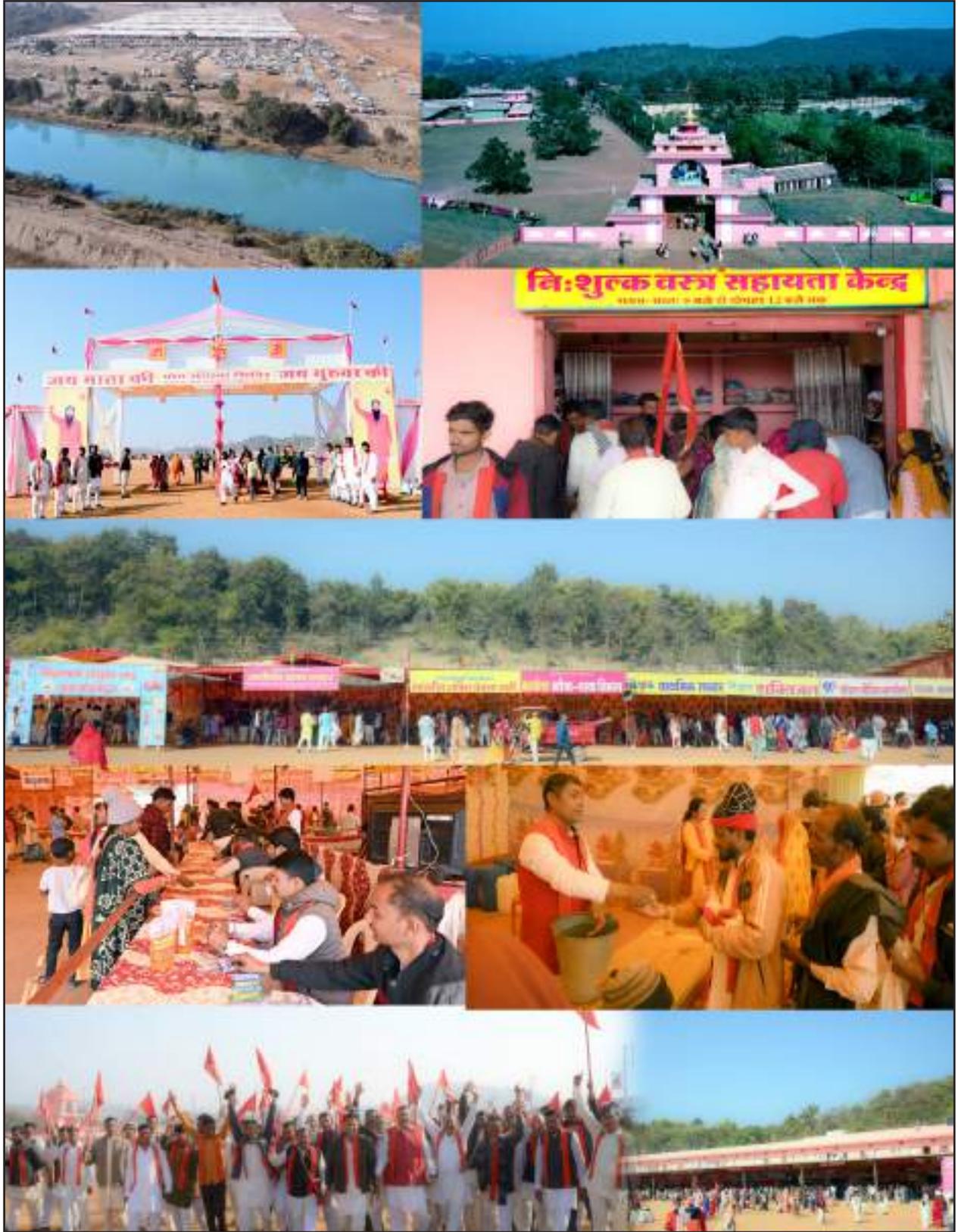
विभिन्न प्रकार के पुष्पों और हरे-भरे वृक्षों से आच्छादित पूज्य दण्डी संन्यासी स्वामी श्री रामप्रसाद आश्रम जी महाराज की समाधिस्थल की मनोरमता तो अद्वितीय है। यहीं पर दिव्यजल का स्रोत भी है, जहाँ पर ऋषिवर श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के आशीर्वाद से भक्तों की सुविधा हेतु हैण्डपम्प व विद्युत मोटर पम्प लगाकर व्यवस्थित रूप से अनेक नल लगाए गए हैं, जिनसे वहाँ पहुंचने वाले भक्तगण दिव्यजल प्राप्त करते हैं। सबसे बड़ी बात यह कि इस स्थल पर कुछ समय बैठने मात्र से अपूर्व शान्ति की अनुभूति होती है।

स्थापना दिवस पर्व पर सिद्धाश्रम पहुंचे श्रद्धालु, भक्त इस मनोरम स्थल में भी क्रमबद्ध रूप से पहुंचे और समाधि की परिक्रमा करके अपने जीवन में संस्कारों का एक क्रम और जोड़ा।



दानवीर बाबा की गुफास्थली

समाधि की परिक्रमा करके दिव्यजल लेने के पश्चात् श्रद्धालु भक्तजन वहीं समीप ही स्थित दानवीर बाबा के गुफास्थल पर गए और नमन किया। इस स्थल को भी पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम ट्रस्ट के द्वारा सुव्यवस्थित रूप प्रदान किया गया है। इस स्थान पर भी बैठकर भक्तगण शान्ति की अनुभूति प्राप्त करते हैं।



सिद्धाश्रम धाम में योग साधना शिविर के विभिन्न मनोरम दृश्य

आपका शरीर, आपका मन प्रफुल्लित रहेगा। अन्यथा, आप तो विकारात्मक और भयानक स्वप्न तो देखते ही रहते हो और जब सुबह नौद खुलती है, तो आपका पूरा शरीर शिथिल और मस्तिष्क में भारीपन रहता है, उठने का मन ही नहीं करता।

हर समय अपने विचारों पर दृष्टि जमाए रखो कि कहीं मन में नकारात्मक विचार तो नहीं आ रहे हैं और यदि आ रहे हों, तो तत्काल अपने मन को सात्विक विचारों की ओर मोड़ दो। हर समय सात्विक विचारों को प्रवाह दो। नित्यप्रति प्राणायाम करो, बीजमंत्रों 'माँ'-ॐ का जाप करो, कुछ समय आज्ञाचक्र पर ध्यान लगाओ। इससे तृप्ति मिलेगी, आपकी चेतनाशक्ति प्रभावक होगी तथा निर्णय लेने की क्षमता बढ़ेगी।

सत्य के पथ पर चलो, धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करो और उनमें निर्दिष्ट बातों पर अमल करो। अपने मोबाइलों पर अच्छी चीजें देखो, विकारात्मक दृश्यों से पूरी तरह परहेज करो। अच्छा सोचो तथा पुरुषार्थ और परोपकार की दिशा में आगे बढ़ो। हर घर में 'माँ' की ऊर्जा पहुंचाने का प्रयास करो, लोगों को नशे-मांसाहार से मुक्त चरित्रवान् जीवन जीने की प्रेरणा दो और जहाँ भी कुछ गलत हो रहा हो, उसका विरोध करो।

कर्म के साथ ही मानसिक विचारों का भी फल मिलता है। कहीं पर करोड़ों की सम्पदा पड़ी हो, तो जब तक आपके मन में लोभ उत्पन्न नहीं होगा, तब तक आप उसे छू भी नहीं सकते और जैसे ही मन में लोभरूपी विचार आया नहीं कि झट से आप उसे उठा लेंगे। इसी तरह जब तक क्रोध की भावना उत्पन्न नहीं होगी, आप किसी को एक तमाचा भी नहीं मार पाओगे। जब तक विकारात्मक भाव अपने अन्दर नहीं लगे, तब तक विकारों की ओर आपका एक कदम भी आगे नहीं बढ़ेगा। सतोगुणी विचार रखो, इससे मानसिक प्रसन्नता होगी और जब मन प्रसन्न होगा, तो आपकी कार्यक्षमता दसियों गुना बढ़ जायेगी और आपको लक्ष्य तक पहुंचने से कोई रोक नहीं सकता।

सत्य को समझने का प्रयास करेंगे, सत्यपथ पर चलेंगे, तो तुम्हारा अन्तःकरण निर्मल और पवित्र रहेगा। गुरु के आदेश-निर्देशों का पालन करते रहेंगे, तो तुम्हारा हर कार्य सफल होगा। अपने गुरु के आशीर्वाद का फल देखना है, तो अपने अन्तःकरण



शिविर में भावगीत प्रस्तुत करते हुए वीरेन्द्र दीक्षित जी

में देखो कि तुम्हारे जीवन में कितना परिवर्तन आ रहा है कि तुम्हारे बच्चे नशा नहीं कर रहे हैं, चेतनावान् बन रहे हैं, धर्मवान और कर्मवान बन रहे हैं तथा विकारात्मक चीजों को छोड़कर 'जय माता की-जय गुरुवर की' जयकारे लगाते हैं। आपको हजारों जन्म मिले होंगे, लेकिन मेरा सान्निध्य इस एक जीवन में प्राप्त हुआ है, इसे सार्थक बना लो। मेरे मार्गदर्शन में अपने जीवन को सार्थक बना सकते हो, अपने जीवन को संवार सकते हो।

सनातन के रक्षक बनो, आपका गुरु आपके साथ है, आपको ऊर्जा देने के लिए तत्पर है। निर्भयता, निडरता का जीवन जियो, मौत का भय त्याग दो और जिस दिन मौत का भय त्याग दोगे, तुम्हारी चेतना ऊर्ध्वगामी होती चली जाएगी। आत्महत्या करने की बात अपने मन में लाओ भी नहीं। हत्या से भी बड़ा जघन्य पाप आत्महत्या करना है।'

परम पूज्य गुरुवरश्री ने जैसे ही अपने चिन्तन को विराम दिया, आरती का क्रम शक्तिस्वरूपा बहनों व सिद्धाश्रम चेतनाओं ने प्रारम्भ किया। आरतीक्रम सम्पन्न होने के पश्चात् शिविरस्थल पर उपस्थित सभी भक्तों, श्रद्धालुओं ने क्रमबद्ध होकर गुरुचरणपादुकाओं का स्पर्श करते हुए प्रसाद प्राप्त किया।



77वाँ गणतंत्र दिवस समारोह



26 जनवरी
2026



राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस (26 जनवरी) जहाँ पूरे देश में हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया, वहीं ऋषिवर सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज की तपस्थली दिव्यधाम पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम में इस गौरवशाली अवसर पर प्रातः 07:30 बजे भारतीय शक्ति चेतना पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष शक्तिस्वरूपा बहन संध्या शुक्ला जी और पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम ट्रस्ट की प्रधान न्यासी शक्तिस्वरूपा बहन ज्योति शुक्ला जी ने तिरंगाध्वज फहराया। ध्वजारोहण होते ही कार्यक्रम स्थल पर उपस्थित सिद्धाश्रमवासियों, शक्तिसाधकों, देशप्रेमियों ने सावधान की मुद्रा में खड़े होकर समवेतस्वर में राष्ट्रगान का गायन किया। इस अवसर पर भगवती मानव कल्याण संगठन के केन्द्रीय महासचिव सिद्धाश्रमरत्न अजय अवस्थी जी, सौरभ द्विवेदी 'अनूप' जी, रजत मिश्रा जी और आशीष शुक्ला (राजू भइया) जी तथा सिद्धाश्रम चेतना अद्वैत जी एवं आत्रेय जी की

उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

'हिन्दू राष्ट्र भारत माता की जय' उद्घोष के साथ उपस्थित राष्ट्रभक्तों को सम्बोधित करते हुए सिद्धाश्रमरत्न सौरभ द्विवेदी जी ने कहा कि "यह एकमात्र हमारा भारत देश है, जहाँ पर देश के उत्थान के लिए इतिहास में क्या-क्या हुआ? उन सब चीजों को उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इस गणतंत्र दिवस पर्व को ही ले लीजिए कि देशभर में उल्लास-उमंग का वातावरण है। छोटे-छोटे बच्चे भी अपने-अपने विद्यालयों में गणतंत्र दिवस मना रहे हैं। हमें अपने सौभाग्य को सराहना चाहिए कि हम भारतदेश के वासी हैं।

हर देश के संविधान केवल उस देश के लोगों के लिए होंगे, जबकि कहने को तो भारत देश का संविधान 1950 में बना, लेकिन जिस तरह भारत देश युगों-युगों से स्थापित है, उसी तरह यहाँ का संविधान भी युगों-युगों का है। हमारे



ऋषियों-मुनियों के द्वारा धर्म आधारित संविधान बनाया गया था और वह केवल भारत देश के लिए नहीं था, बल्कि दूर-दूर के देश से आने वाले लोग भी हमारे संविधान के कारण भारत देश में शरण पाते थे। इतनी सम्प्रभुता हमारे देश के संविधान में थी।

चाहे कोई कितना ही धर्मानिरपेक्ष की बातें कह ले, लेकिन भारत देश की मिट्टी, भारत देश की हवा, भारत देश के कण-कण में सदैव से धर्म व्याप्त है और धर्म जितना अधिक प्रभावी होगा, भारत देश का संविधान भी उतना ही प्रभावी होगा। तो, भारत देश के संविधान को धर्म से अलग नहीं किया जा सकता। धर्म एक होता है, धर्म अलग-अलग नहीं होता। इसीलिए परम पूज्य सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज ने सभी जाति, धर्म,

सम्प्रदाय के लिए एक ही विचारधारा दी है। नशे-मांसाहार से मुक्त, जातिभेद, छुआछूत से रहित जीवन। धर्म, राष्ट्र व मानवता की सेवा के लिए हमारे क्या कर्तव्य हैं? एकसमान साधनाएं और इस विचारधारा को लेकर भगवती मानव कल्याण संगठन के कार्यकर्ता देशभर में जन-जन तक पहुंच रहे हैं।

हमारी सरकारों को समझना चाहिए कि मनुष्यमात्र के कल्याण के लिए संविधान को कैसे लागू करना है? लेकिन राजनैतिक पार्टियां वोट के लिए धार्मिक लड़ाईयाँ करवा रही हैं, जातपात का जहर बो रही हैं। हमारे देश में कभी दो सौ जातियाँ थीं, लेकिन वर्तमान में राजनीतिक रोटियां सेंकने के लिए पन्द्रह हजार से अधिक जातियाँ बना दी गई हैं। इसीलिए भारतीय शक्ति चेतना पार्टी का गठन किया गया। इस पार्टी का सभी लोगों





को धर्मानुकूल एकसमान व्यवस्था दिलाने का लक्ष्य है और जब भारतीय शक्ति चेतना पार्टी धर्म को लेकर चल रही है, तो किसी भी जाति, सम्प्रदाय के साथ भेदभाव का सवाल ही नहीं उत्पन्न होता।

हमें नशामुक्त भारत के लिए, मांसाहारमुक्त भारत के लिए, जातिभेद, छुआछूतरोहित भारत निर्माण के लिए और सभी लोगों के कल्याण के लिए कार्य करना है, गांव-गांव, घर-घर जाकर लोगों को परम पूज्य गुरुदेव जी की विचारधारा को बतलाना है, जिससे सभी का जीवन सुखमय बन सके।’

उद्बोधन से पूर्व कुछ गुरुभाई-बहनों के द्वारा राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत भावगीत व काव्यपाठ प्रस्तुत किए गए। प्रारंभिक अंश इस प्रकार हैं-

है समर्पित ये तन आपको, भारती माँ नमन आपको।
राष्ट्रहित में जीवन बिताएंगे हम,...-बाबूलाल विश्वकर्मा जी,
दमोह। देश के प्रति अर्पित यह प्राण अपना होना चाहिए...-
विवेक पाठक जी, जौनपुर। हम शिष्य महान ऋषि के हैं, दुनिया
को बदलकर मानेंगे-अल्पी साहू जी, कानपुर।

आराध्या शुक्ला जी, सिद्धाश्रम के द्वारा बालसुलभ मोहक वाणी में प्रस्तुत भावगीत-धर्म, राष्ट्र, मानवता की खातिर ये कदम बढ़ें। कुछ तेरे कदम बढ़ें, कुछ मेरे कदम बढ़ें।

रामलाल कुशवाहा जी, दमोह के द्वारा प्रस्तुत काव्यपाठ-हमारे संगठन की देखो एकता, श्री शक्तिपुत्र हैं रचयिता, जिनकी महिमा है भारी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए भगवती मानव कल्याण संगठन के केन्द्रीय प्रचारमंत्री वीरेन्द्र दीक्षित जी ने कहा कि “ देश की सरकारों से हमारी यही अपेक्षा है कि पूरे देश को नशामुक्त बनाएं। यदि सरकारों को नशे से उत्पन्न हो रहीं बुराईयाँ नजर नहीं आतीं, तो ज़मीनीस्तर पर उतरकर देखें कि किस तरह सभी सरकारी योजनाएं ध्वस्त हो रही हैं, न महिलाएं सुरक्षित हैं, न बच्चे सुरक्षित हैं, न शिक्षा सुरक्षित है, न कोई व्यवस्था सुरक्षित है।’

‘हिन्दूराष्ट्र भारत माता की जय’ उद्घोष के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ और अंत में मगज के लड्डुओं का वितरण किया गया, जिसे प्राप्त करके सभी प्रस्थित हुए।

भक्तिभाव से परिपूर्ण वातावरण में मनाया गया सिद्धाश्रम चेतना आरूणी जी का जन्मदिन



पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम धाम में सिद्धाश्रम चेतना आरूणी का जन्मदिन भक्तिभाव से परिपूर्ण वातावरण में मनाया गया। दिनांक 13 जनवरी 2026, प्रातःकालीन आरतीक्रम व प्रणामक्रम के उपरान्त, ऋषिवर सद्गुरुदेव श्री शक्तिपुत्र जी महाराज के सान्निध्य में आरूणी जी स्वामी श्री रामप्रसाद आश्रम जी महाराज की समाधिस्थल पर पहुंचीं और समाधि की परिक्रमा करके दानवीर बाबा की गुफास्थल पर पहुंचकर नमन किया और त्रिशक्ति गोशाला पहुंचकर गायों को अपने हाथों से रोटियाँ खिलाईं। इतना ही नहीं, आरूणी जी के द्वारा सिद्धाश्रम स्थित निःशुल्क वस्त्र सहायता केन्द्र से जरूरतन्दों को वस्त्रों का वितरण किया गया।

इस पावन अवसर पर परम पूज्य गुरुवरश्री ने सिद्धाश्रम चेतना आरूणी जी को शुभाशिर्वाद प्रदान किया और सिद्धाश्रमवासियों व सिद्धाश्रम पहुंचे 'माँ' भक्तों ने अन्नपूर्णा भंडारे में भोजन प्रसाद- पूड़ी, पुलाव, मटर पनीर और शिमला मिर्च, फूलगोभी की मिक्स सब्जी, दहीबड़ा व फुल्की आदि ग्रहण करके तृप्ति का अनुभव किया।

प्रातःकाल की तरह सायंकालीन बेला में आरतीक्रम के बाद सभी भक्तों ने क्रमबद्ध रूप से सद्गुरुदेव जी महाराज के श्रीचरणों को स्पर्श करके आशीर्वाद प्राप्त किया। तत्पश्चात् हलुआ और नारियल प्रसाद प्राप्त करके जीवन को धन्य बनाया।

अध्यात्म गंगा गीता ज्ञान

क्रमशः ...

यतः प्रवृत्तिभूतानां येन सर्वमिदं ततम ।

स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः ॥

भावार्थ- जिस परमेश्वर से सम्पूर्ण प्राणियों की उत्पत्ति हुई है और जिससे यह समस्त जगत व्याप्त है, उस परमेश्वर की अपने स्वाभाविक कर्मों द्वारा पूजा करके मनुष्य परम सिद्धि को प्राप्त हो जाता है ।

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात ।

स्वभावनियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम ॥

भावार्थ- अच्छी प्रकार आचरण किये हुए दूसरे के धर्म से गुणरहित भी अपना धर्म श्रेष्ठ है, क्योंकि स्वभाव से नियत किये हुए स्वधर्म कर्म को करता हुआ मनुष्य पाप को नहीं प्राप्त होता ।

सहजं कर्म कौन्तेय सदोषमपि न त्यजेत ।

सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः ॥

भावार्थ- अतएव हे कुन्तीपुत्र! दोषयुक्त होने पर भी सहज कर्म को नहीं त्यागना चाहिए, क्योंकि धुएँ से अग्नि की भाँति सभी कर्म किसी-न-किसी दोष से युक्त हैं ।

असक्तबुद्धिः सर्वत्र जितात्मा विगतस्पृहः ।

नैष्कर्म्यसिद्धिं परमां संन्यासेनाधिगच्छति ॥

भावार्थ- सर्वत्र आसक्ति रहित बुद्धिवाला, स्पृहारहित और जीते हुए अन्तःकरणवाला पुरुष सांख्ययोग के द्वारा उस परम नैष्कर्म्यसिद्धि को प्राप्त होता है ।

सिद्धिं प्राप्तो यथा ब्रह्म तथाप्नोति निबोध मे ।

समासेनैव कौन्तेय निष्ठा ज्ञानस्य या परा ॥

भावार्थ- जो कि ज्ञानयोग की परानिष्ठा है, उस नैष्कर्म्य सिद्धि को जिस प्रकार से प्राप्त होकर मनुष्य ब्रह्म को प्राप्त होता है, उस प्रकार हे कुन्तीपुत्र! तू संक्षेप में ही मुझसे समझ ।

बुद्ध्या विशुद्ध्या युक्तो धृत्यात्मानं नियम्य च ।

शब्दादीन्विषयांस्त्यक्त्वा रागद्वेषौ व्युदस्य च ॥

विविक्तसेवी लघ्वाशी यतवाक्कायमानसः ।

ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपाश्रितः ॥

अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम ।

विमुच्य निर्ममः शान्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥

भावार्थ- विशुद्ध बुद्धि से युक्त तथा हलका, सात्त्विक और नियमित भोजन करने वाला, शब्दादि विषयों का त्याग करके एकान्त और शुद्ध देश का सेवन करने वाला, सात्त्विक धारणशक्ति के द्वारा अन्तःकरण और इन्द्रियों का संयम करके मन, वाणी और शरीर को वश में कर लेने वाला तथा अहंकार, बल, घमण्ड, काम, क्रोध और परिग्रह का त्याग करके निरन्तर ध्यानयोग के परायण रहने वाला, ममता रहित और शान्तियुक्त पुरुष सच्चिदानन्दघन ब्रह्म में अभिन्नभाव से स्थित होने का पात्र होता है ।

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति ।

समः सवेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम ॥

भावार्थ- फिर वह सच्चिदानन्दघन ब्रह्म में एकीभाव से स्थित, प्रसन्न मनवाला योगी न तो किसी के लिए शोक करता है और न किसी की आकांक्षा ही करता है । ऐसा समस्त प्राणियों में समभावना वाला योगी मेरी पराभक्तिको प्राप्त हो जाता है ।

भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः ।

ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम ॥

भावार्थ- उस पराभक्ति के द्वारा वह मुझ परमात्मा को, मैं जो हूँ और जितना हूँ, ठीक वैसा-का-वैसा तत्त्व से जान लेता है तथा उस भक्ति से मुझको तत्त्व से जानकर तत्काल ही मुझमें प्रविष्ट हो जाता है ।

क्रमशः ...

योगजगतः

क्रमशः ...

पीठ के बल पर लेटकर किये जाने वाले आसन

25. शीर्षबद्धहस्त मेरुदण्डासन

विधि- पीठ के बल लेटें और दोनों हाथों की उंगलियों को एक-दूसरे में फंसाकर, सिर के पीछे लगायें। फिर रेचक करते हुए बैठें और लेटें। इसी क्रम को 5 से 10 बार कर लें।

लाभ- इससे पेट, छाती, गर्दन, पीठ व रीढ़ के दोष दूर होते हैं, मेरुदण्ड में लचीलापन आता है तथा मोटापा दूर होता है।



26. चक्रासन

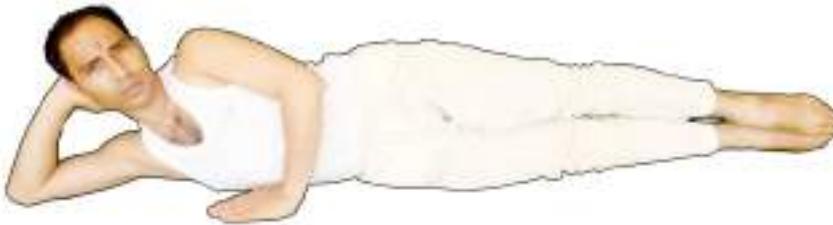
विधि- पीठ के बल लेटें तथा दोनों पैरों को घुटनों से मोड़कर इस प्रकार लायें कि एड़ियां नितंब के पास आजाएं। अब दोनों हाथों को कंधे के ऊपर से लेजाकर सिर के पीछे हथेलियों को ज़मीन पर टिका दें। फिर श्वास भरते हुए हाथों और पैरों पर शरीर का भार डालते हुए, कमर के भाग को पूरा ऊपर की ओर उठा दें। कुछ देर रुककर यथास्थिति वापस आजायें।



लाभ-
इससे सम्पूर्ण शरीर का व्यायाम होता है, शरीर में चेतना का संचार होता है, कमर में लचीलापन आता है और शरीर में स्फूर्ति और तेज की वृद्धि होती है।

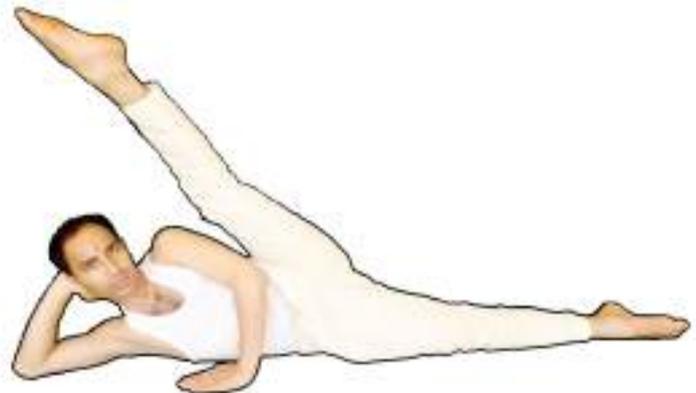


27. पार्श्वशयन पादचालासन



विधि- बायीं करवट लेट जायें तथा बायीं कोहनी को ज़मीन पर टिकाकर सिर को हाथ पर रख लें। दायें पैर को सीधा आकाश की ओर यथासंभव उठायें और नीचे ले जायें। इस क्रम को 4 से 5 बार करें। फिर दायीं करवट लेटकर इसी क्रम को बायें पैर से करें।

लाभ- इस आसन से पार्श्व भाग के अंगों का व्यायाम होजाता है तथा नाभि और पैरों में दृढ़ता आती है।



नशाविरोधी जनान्दोलन

भगवती मानव कल्याण संगठन के कार्यकर्ताओं ने पुलिस को सूचना देकर ज़ब्त करवाई अवैध शराब की खेपें

भगवती मानव कल्याण संगठन के कार्यकर्ता नशाविरोधी अभियान के तहत पुलिस को सूचना देकर लगातार अवैध शराब की खेपें ज़ब्त करवा रहे हैं।

इसी क्रम में, दिनांक 24 जनवरी को रात्रि 10:00 बजे दमोह ज़िले के तेन्दूखेड़ा थानान्तर्गत ग्राम झलौन के बसस्टैण्ड चौराहे पर दो पेटी, मात्रा 100 पाव देशी मसाला शराब पकड़ी गई। आरोपी भरत साहू और गुटारू लोधी हीरो एचएफ डीलक्स मोटरसाइकिल क्रमांक-एमपी 20, जेबी/3915 से शराब लेजा रहे थे।

दिनांक 27 जनवरी को सुबह 08:00 बजे दमोह ज़िले के दमोह कोतवाली थाना अन्तर्गत रामकुमार स्कूल के पास 25 पाव देशी मसाला और 25 पाव देशी प्लेन शराब पकड़ी गई। दो आरोपी होंडा मोटरसाइकिल से शराब लेजा रहे थे।

दिनांक 27 जनवरी को सुबह लगभग 08:30 बजे दमोह ज़िले के दमोह कोतवाली थानान्तर्गत हटा नाका, ओवरब्रिज के पास 50 पाव देशी मसाला शराब पकड़ी गई। आरोपी राज अहिरवार एक्टिवा मोटरसाइकिल से शराब लेजा रहा था।

दिनांक 27 जनवरी को ही सुबह लगभग 09:00 बजे दमोह ज़िले के कोतवाली थानान्तर्गत रेलवे स्टेशन के पास एक पेटी अवैध शराब आरोपी पंकज रजक, निवासी-दमोह के पास से पकड़ी गई।

दिनांक 28 जनवरी को दोपहर लगभग 12:00 बजे दमोह ज़िले के बटियागढ़ थानान्तर्गत बसस्टैण्ड बटियागढ़ में तीन पेटी शराब पकड़ी गई। दो आरोपी बिना नम्बर की मोटरसाइकिल से शराब लेजा रहे थे।



दमोह ज़िले के तेन्दूखेड़ा थानान्तर्गत झलौन गांव में बस स्टैण्ड चौराहे पर पकड़ी गई शराब



दमोह ज़िले के कोतवाली थानान्तर्गत दमोह शहर में रामकुमार स्कूल के पास पकड़ी गई शराब



दमोह ज़िले के कोतवाली थानान्तर्गत हटा नाका ओवरब्रिज के पास पकड़ी गई शराब



दमोह ज़िले के देहात थानान्तर्गत सागर नाका चौकी के पास पकड़ी गई शराब



दमोह ज़िले के कोतवाली थानान्तर्गत रेल्वे स्टेशन के पास दमोह में पकड़ी गई शराब



दमोह ज़िले के कोतवाली थानान्तर्गत रेल्वे स्टेशन के पास दमोह में पकड़ी गई शराब



दमोह ज़िले के बटियागढ़ थानान्तर्गत बस स्टैण्ड बटियागढ़ में पकड़ी गई शराब

दिनांक 29 जनवरी को रात्रि 08:00 बजे दमोह ज़िले के कोतवाली थानान्तर्गत रामकुमार स्कूल के पास, दमोह में दो पेटी, मात्रा 75 पाव देशी मसाला और 25 पाव देशी प्लेन शराब पकड़ी गई। आरोपी आकाश रैकवार दोपहिया वाहन स्कूटी से शराब लेजा रहा था।

दिनांक 29 जनवरी को रात्रि 08:30 बजे दमोह ज़िले के दमोह देहात थानान्तर्गत सागर नाका चौकी के पास एक पेटी देशी मसाला शराब पकड़ी गई। आरोपी अजय रजक डीलक्स मोटरसाइकिल से शराब लेजा रहा था।

दिनांक 29 जनवरी को रात्रि 09:00 बजे दमोह ज़िले के दमोह देहात थानान्तर्गत सागर नाका चौकी के पास दो पेटी, मात्रा 75 पाव देशी मसाला और 25 पाव देशी प्लेन शराब पकड़ी गई। आरोपी एक स्थान पर बैठकर शराब बेंच रहा था।

दिनांक 29 जनवरी को ही रात्रि 09:00 बजे दमोह ज़िले के कोतवाली थानान्तर्गत रेल्वे स्टेशन के पास एक पेटी देशी मसाला शराब एक आरोपी के पास से पकड़ी गई।



दमोह ज़िले के कोतवाली थानान्तर्गत दमोह शहर के रामकुमार स्कूल के पास पकड़ी गई शराब



दमोह ज़िले के देहात थानान्तर्गत सागर नाका चौकी के पास पकड़ी गई शराब

क्रमशः ...

नशाविरोधी जनान्दोलन के अन्तर्गत पकड़ी गई अवैध शराब की सूची

1807	24.01.2026	बस स्टेशन चौराहा, ग्राम- झलौन, थाना-तेन्दूखेड़ा, जिला-दमोह (म.प्र.)	100 पाव देशी मसाला अवैध शराब, हीरो एचएफ डीलक्स मोटरसाइकिल क्रमांक-एमपी 20, जेबी/3915, दो आरोपी
1808	27.01.2026	रामकुमार स्कूल के पास, दमोह थाना-कोतवाली, जिला-दमोह (म.प्र.)	25 पाव देशी मसाला और 25 पाव देशी प्लेन अवैध शराब, बिना नम्बर की होंडा मोटरसाइकिल, दो आरोपी
1809	27.01.2026	हटा नाका, ओवरब्रिज के पास, थाना-कोतवाली, जिला-दमोह (म.प्र.)	50 पाव देशी मसाला अवैध शराब, बिना नम्बर की एक्टिवा मोटरसाइकिल, एक आरोपी
1810	27.01.2026	रेल्वे स्टेशन के पास, दमोह, थाना-कोतवाली, जिला-दमोह (म.प्र.)	01 पेटी देशी मसाला अवैध शराब, बिना नम्बर की एक्टिवा मोटरसाइकिल, एक आरोपी
1811	28.01.2026	बस स्टैण्ड के पास, बटियागढ़ थाना-बटियागढ़, जिला-दमोह (म.प्र.)	03 पेटी देशी मसाला अवैध शराब, बिना नम्बर की मोटरसाइकिल, दो आरोपी
1812	29.01.2026	रामकुमार स्कूल के पास, दमोह थाना-कोतवाली, जिला-दमोह (म.प्र.)	75 पाव देशी मसाला और 25 पाव देशी प्लेन अवैध शराब, बिना नम्बर की दोपहिया वाहन स्कूटी, एक आरोपी
1813	29.01.2026	सागर नाका पर , चौकी- सागर नाका थाना-देहात, जिला-दमोह (म.प्र.)	01 पेटी देशी मसाला अवैध शराब, बिना नम्बर की डीलक्स मोटरसाइकिल, एक आरोपी
1814	29.01.2026	सागर नाका पर , चौकी- सागर नाका थाना-देहात, जिला-दमोह (म.प्र.)	75 पाव देशी मसाला और 25 पाव देशी प्लेन अवैध शराब, एक आरोपी
1815	29.01.2026	रेल्वे स्टेशन के पास, दमोह, थाना-कोतवाली, जिला-दमोह (म.प्र.)	01 पेटी देशी मसाला प्लेन अवैध शराब, एक आरोपी

योगभारती विवाह समारोह

सूचित किया जाता है कि आगामी योगभारती सामूहिक विवाह का कार्यक्रम पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम, ब्यौहारी, जिला-शहडोल, मध्यप्रदेश में चैत्र नवरात्र की पंचमी तिथि दिनांक 23 मार्च 2026 दिन सोमवार को आयोजित किया जाएगा।

आत्मज्ञान

तैयारी के बिना लक्ष्यप्राप्ति संभव नहीं

एक गाँव में सुखवा नाम का एक लकड़हारा रहता था। वह दिनभर परिश्रम करता, फिर भी दो वक्त की रोटी मुश्किल से जुटा पाता था। वह हमेशा भगवान् को कोसता कि 'ऊपर वाले ने मेरे भाग्य में दुःख ही दुःख लिखा है।'

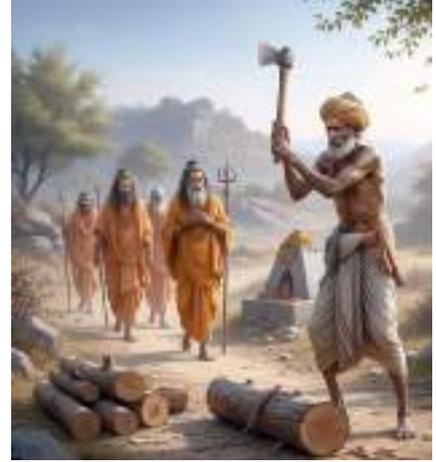
एक दिन वह जंगल में एक वृक्ष के नीचे बैठकर रो रहा था, तभी वहाँ से एक महात्मा गुजरे। सुखवा ने उनके पैर पकड़ लिए और अपने दुर्भाग्य का रोना रोने लगा। महात्मा ने उसकी पुरानी कुल्हाड़ी देखी और बोले, 'बेटा, तुम्हारी कुल्हाड़ी धारहीन हो चुकी है, जिसे लेकर तुम रोज जंगल आते हो, पेड़ पर प्रहार करते हो, लेकिन तुम्हारी कुल्हाड़ी में धार ही नहीं है। इसलिए तुम्हें मेहनत ज्यादा करनी पड़ती है और फल कम मिलता है।' सुखवा ने कहा, 'महाराज, धार लगाने में समय बर्बाद होगा, उतनी देर में तो मैं कुछ और लकड़ियाँ काट लूंगा।'

महात्मा मुस्कराए और बोले, 'यही तुम्हारी सबसे बड़ी भूल है। अपनी कुल्हाड़ी की धार तेज करना समय की बरबादी

नहीं, बल्कि मेहनत को सफल बनाने की तैयारी है।' सुखवा को अपनी गलती समझ में आ गई। उसने कुल्हाड़ी की धार तेज की, जिसमें दो घंटे का समय लगा, लेकिन परिणाम

यह हुआ कि जितनी लकड़ी वह दिनभर में काट पाता था, उतनी लकड़ी उसने मात्र दो घंटे में काट ली।

इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि बिना तैयारी के लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता।



ॐ शक्तिपुत्राय गुरुभ्यो नमः

ॐ

ॐ जगदम्बिके दुर्गायै नमः

**पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम ट्रस्ट के
आश्रम निर्माण, समाजसेवा एवं जनजागरण
अभियान में सहभागिता हेतु अपनी मासिक
आय की पांच प्रतिशत राशि का समर्पण
निम्नवत् बैंक खाते में करें:**



नाम – पंचज्योति शक्तितीर्थ सिद्धाश्रम ट्रस्ट

बैंक – भारतीय स्टेट बैंक, शाखा – ब्योहारी (06075)

अकाउण्ट नम्बर – 35030046927, आई.एफ.एस. कोड – SBIN0006075

विशेष

समर्पण राशि खाते में जमा करने के पश्चात् निम्नांकित मोबाइल नम्बरों में से किसी एक पर समर्पण राशि का पूरा विवरण (समर्पणकर्ता का नाम, समर्पणकर्ता के पिता या माता का नाम, सम्पूर्ण पता, बैंक नम्बर या आधार नम्बर, जमा की गई राशि व तिथि)

अवश्य सूचित करें। मोबाइल नम्बर – 9171337768, 9981005001, 7693853203

नोट – यह सुविधा मात्र सम्स्त भारतीयवासियों के लिए ही है। विदेश से जमा की गई राशि स्वीकार नहीं की जाएगी।



शिशिर ऋतु में अस्थमा और श्वसन रोग

शिशिर (माघ-फाल्गुन) वह कड़कड़ाती सर्दी का मौसम है, जब तापमान 5-10 डिग्री तक गिर जाता है, हवा बेहद शुष्क और ठिठुरन भरी होती है और कोहरा घना रहता है। यही वह समय है, जब अस्थमा और पुरानी श्वसन बीमारियों के मरीज सबसे ज्यादा परेशान होते हैं। सुबह-शाम साँस फूलना, सीने में जकड़न, घरघराहट, रात में खांसी के दौरों और नींद टूटना, ये सब शिशिर के आम मेहमान बन जाते हैं।

आयुर्वेद में इसे “शीत-वात-कफ प्रकोप” कहा जाता है। ठंडी-शुष्क हवा से वात और कफ दोनों बढ़ते हैं, श्वसन मार्ग सूख जाता है और बलगम जमकर साँस की नली को अवरुद्ध कर देता है, लेकिन प्रकृति ने शिशिर के लिए ही एक चमत्कारी औषधि दी है— वासा (Adhatoda vasica), जिसे “श्वासहरि महौषधि” कहा जाता है। इसे हिन्दी में अडूसा (Adusa) या अडुलसा भी कहते हैं।

शिशिर में अस्थमा क्यों बढ़ता है?

1. ठंडी हवा ब्रॉंकियल ट्यूब को सिकोड़ती है।
2. शुष्कता से श्लेष्मा झिल्ली सूखती है और सूजन बढ़ती है।
3. कोहरे में प्रदूषक कण फेफड़ों तक आसानी से पहुँचते हैं।
4. विटामिन D की कमी से इम्यूनिटी गिरती है।
5. रात का तापमान तेजी से गिरने से रात में दौरों बढ़ते हैं।

वासा— फेफड़ों की सबसे बड़ी मित्र

वासा के पत्तों में वासिसिन और वासिसिनोन नामक एल्कलॉइड्स होते हैं, जो ब्रॉकोडाइलेटर की तरह काम करते हैं। अर्थात्, साँस की नलियाँ चौड़ी करते हैं। वैज्ञानिक शोध बताते हैं कि:

वासा का नियमित सेवन अस्थमा के दौरों को कम करता है, फेफड़ों की क्षमता बढ़ाता है, खांसी और बलगम कम करता है।

तीन सबसे शक्तिशाली प्राकृतिक उपाय

1. वासा काढ़ा— यह साँसों का अमृत शिशिर में अस्थमा का सबसे तेज और सुरक्षित उपाय है। बनाने की विधि— (दिन में 2 बार):

ताजे वासा के पत्ते 10-12 या सूखे पत्ते 5-6 ग्राम,

अदरक का टुकड़ा 1 इंच, 4-5 तुलसी पत्ते, 2-3 काली मिर्च, 1 लौंग,

सबको 300 मिली. पानी में उबालें, जब 100 मिली. पानी रह जाए, तब उतार लें और छानकर उसमें 1 चम्मच शहद तथा आधा नींबू निचोड़ें।

सुबह खाली पेट और शाम 4 बजे गुनगुना पिएं।

विशेष: यदि दमा पुराना है, तो इसमें मुलेठी पाउडर 1 ग्राम और पिप्पली चूर्ण 500 मिलीग्राम मिलाएं। यह काढ़ा बलगम को पतला कर बाहर निकालता है और साँस की नली को 4-6 घंटे तक खुला रखता है।

2. प्राणायाम— (फेफड़ों की प्राकृतिक मालिश) ठंड में भारी व्यायाम नहीं करना चाहिए, पर प्राणायाम चमत्कार करते हैं। सुबह 15 मिनट अवश्य करें:

भस्त्रिका प्राणायाम— 3 राउंड (30-30 तेज श्वास), इससे फेफड़ों में गर्मी पैदा होती है।

उज्जायी प्राणायाम— 10 राउंड (गले से हल्की घरघराहट के साथ), इससे श्वसन मार्ग को नमी मिलती है।

नाड़ी शोधन— 10 मिनट करें, इससे ऑक्सीजन सप्लाई बढ़ती है।

अंत में 5 मिनट शीतली प्राणायाम करें (यदि खांसी न हो)।

रात को सोने से पहले केवल 5 मिनट भ्रामरी प्राणायाम करें — यह साइनस और ब्रॉकाइटिस दोनों को शांत करता है। वासा काढ़े के बाद प्राणायाम करने से प्रभाव दोगुना हो जाता है।

3. गर्मी बनाए रखना— (शरीर का आंतरिक हीटर) शिशिर में सबसे बड़ी गलती है ठंड लगने देना। ठंड से बचने के लिए ये 5 काम रोज करें:

सुबह-शाम तिल के तेल से पूरे शरीर की मालिश, गुनगुना स्नान,
गर्दन, कान और पैर हमेशा ऊनी मफलर, टोपी, मोजे से ढककर रखें,
कमरे में ह्यूमिडिफायर या कटोरी में गुनगुना पानी रखें, हवा में नमी बनी रहे,
सोते समय छाती और पीठ पर कपूर + वासा तेल की मालिश करें,
बिस्तर में हॉट वॉटर बैग रखें, इससे रात में दौरे नहीं आएंगे।

अतिरिक्त घरेलू नुस्खे

रोज रात को 1 चम्मच वासावलेह या वासा घृत लें

शहद + वासा का रस (1:1) दिन में 3 बार

हल्दी वाला दूध रात को (हल्दी + वासा पाउडर मिलाकर)

सोंठ + मुनक्का + पिप्पली का लड्डू

भीगे किशमिश 10 + अखरोट 2 रोज सुबह

इस शिशिर साँसें बनें आज्ञाद

शिशिर की ठंड फेफड़ों की दुश्मन नहीं, बल्कि उन्हें मजबूत बनाने का अवसर है। वासा काढ़ा पिएं, प्राणायाम से फेफड़ों को ताकत दें और शरीर को गर्म रखें। इस सर्दी में इन्हेलर का उपयोग कम करें और वासा की पत्तियों का डिब्बा खोलें। साँसें जब आज्ञाद होंगी, तो जीवन स्वयं आनंदमय हो जाएगा।

www.bschauhan09.blogspot.com

माह फ़रवरी - मार्च 2026

महत्त्वपूर्ण व्रत एवं पर्व

दिनांक	दिन	व्रत/पर्व
01 फ़रवरी	रविवार	स्ना. दा. व्रत पूर्णिमा, माघी पूर्णिमा
10 फ़रवरी	मंगलवार	कृष्ण पक्ष अष्टमी (शक्ति साधना दिवस)
15 फ़रवरी	रविवार	महाशिवरात्रि व्रत
17 फ़रवरी	मंगलवार	पूजनीया शक्तिमयी माता जी का जन्मदिवस, स्ना. दा. श्रा अमावस्या
24 फ़रवरी	मंगलवार	शुक्ल पक्ष अष्टमी (गोसेवा समर्पण दिवस)
01 मार्च	रविवार	पूज्य दण्डी संन्यासी स्वामी श्री रामप्रसाद आश्रम जी महाराज पुण्यतिथि
02 मार्च	सोमवार	होलिका दहन, व्रत पूर्णिमा
03 मार्च	मंगलवार	होली उत्सव, स्नानदान पूर्णिमा, चन्द्रग्रहण
05 मार्च	गुरुवार	भाई दोज
08 मार्च	रविवार	रंगपंचमी
11 मार्च	बुधवार	कृष्ण पक्ष अष्टमी (शक्ति साधना दिवस)
18 मार्च	बुधवार	श्राद्ध अमावस्या
19 मार्च	गुरुवार	चैत्र नवरात्राम्भ, स्ना. दा. अमावस्या
26 मार्च	गुरुवार	दुर्गाष्टमी, शुक्ल पक्ष अष्टमी (गोसेवा समर्पण दिवस)
27 मार्च	शुक्रवार	श्रीराम नवमी

सिद्धाश्रम पत्रिका - सदस्यता विवरण

आत्मीय बन्धु,

यदि आप त्रिशक्ति प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड के द्वारा प्रकाशित पूर्ण अध्यात्मिक एवं समसामयिक मासिक 'सिद्धाश्रम पत्रिका' के सदस्य बनना चाहते हैं, तो सम्बन्धित विवरण प्रस्तुत है -

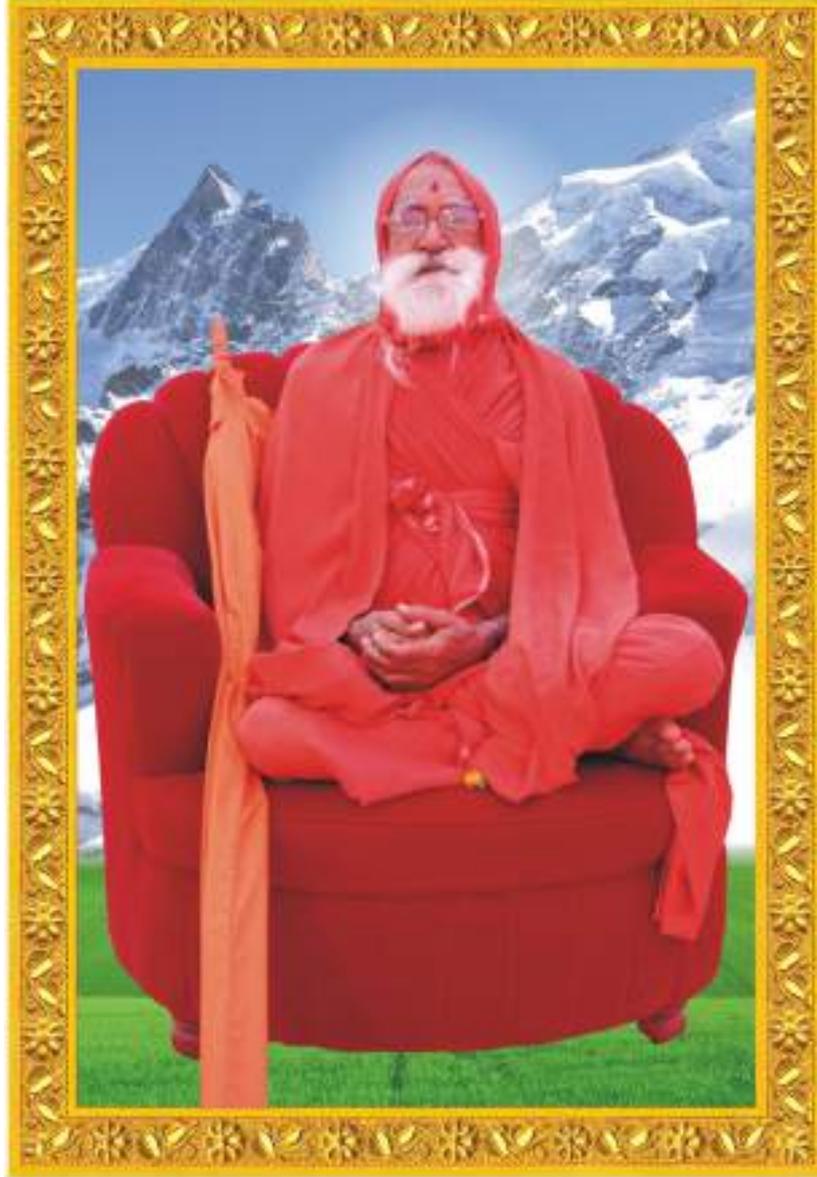
- पत्रिका की सदस्यता का वार्षिक सदस्यता शुल्क रुपये 360 है।
(उपर्युक्त सदस्यता राशि जमा करने पर पत्रिकाएँ साधारण डाक द्वारा प्राप्त की जा सकेंगी, कोरियर या रजिस्टर्ड डाक द्वारा मंगाने पर अतिरिक्त शुल्क देय होगा।)
- सदस्यता शुल्क निम्नांकित बैंक अकाउण्ट में जमा करा सकते हैं-
नाम- त्रिशक्ति प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड अकाउण्ट नम्बर- 34406155612
आई.एफ.एस.सी. कोड- SBIN0006075 बैंक- स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, ब्रांच- ब्यौहारी
(बैंक खाते में राशि डिपॉजिट करने के पश्चात् निम्न मोबाइल नम्बरों में से किसी एक पर अपना नाम, पूरा पता, पिनकोड, सम्पर्क सूत्र सहित बैंक डिपॉजिट की डिटेल्स अवश्य नोट कराएं- 7693853203, 7241173130)
(विशेष ध्यान दें कि इस बैंक खाते में केवल सिद्धाश्रम पत्रिका की सदस्यता राशि ही जमा करें।)
- सदस्य अपना नाम और पूरा पता कृपया स्पष्ट अक्षरों में पिन कोड एवं सम्पर्क सूत्र के साथ अवश्य भेजें।
- त्रिशक्ति प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड किसी भी डाक के विलम्ब, परिवहन क्षति या किसी भी लिपिकीय त्रुटि के लिए जिम्मेदार नहीं होगा।



J) k a f y



पूज्य दण्डी संन्यासी स्वामी श्री रामप्रसाद आश्रमाय नमो नमः



पूज्य दण्डी संन्यासी स्वामी श्री रामप्रसाद आश्रम जी महाराज के महासमाधि में लीन होने की 19वीं पुण्यतिथि (1 मार्च) पर भगवती मानव कल्याण संगठन के समस्त कार्यकर्ताओं एवं श्रद्धालुओं के द्वारा सादर नमन-वंदन-प्रणाम !